इक जोत सर्व व्यापक

Kashmiri Pandit Sabha
JAMMU (Tawi)

पिया दर्शन

(दीदारे महबूब)

रचयिता : महाराज 'बीर'

व्याख्या कर्ता :

पं. जगदीश चंद्र शर्मा

साहित्य-भूषण

इक जोत सर्व व्यापक

K. P. SABHA AMBPHALLA
LIBRARY
No ....
Date..........
JAMMU

पिया दर्शन

(दीदारे महबूब)

रचयिता : महाराज 'बीर'

व्याख्या कर्ता :

पं. जगदीश चंद्र शर्मा
साहित्य-भूषण

सब हक रचयिता के सुरक्षित हैं।

★ पहला हिन्दी संस्करण : जुलाई 1991

1100 प्रतियां

★ खर्च एक प्रति : साढ़े छः रुपए
(Cost Price)

★ कीमत : चार रुपए
(Subsidised Price)

★ मिलने का पता :
सैक्रेटरी रूहानी सत्संग प्रेम समाज (रजि:)
सत्संग घर (पंजाब नैशनल बैंक के साथ)
सलीम टाबरी लुधियाना–141005

सैक्रेटरी रूहानी सत्संग प्रेम समाज (रजि.) लुधियाना
ने जी.एस. प्रिण्टर्ज़, डा. गुज्जरमल रोड, लुधियाना-8
से छपवाकर प्रकाशित की।

पिया दर्शन (दीदारे महबूब)

चंद अलफाज़

रहबरे आज़म महाराज बीर जो बाणी लिखते हैं वह कुदरत से इक-सार यानि हम कलाम हो कर लिखते हैं। उनका यह कलाम पिया दर्शन (दीदारे महबूब) भी कुदरत से एक-सार होनें का अहसास कराता है। इस लिए इसको व्याख्या के साथ किताबी सूरत में छपवा दिया गया है ताकि आम और खास इस बाणी से फायदा उठा सकें और अपनें हकीकी महबूब को अन्दर और बाहर हर जगह सर्वव्यापक महसूस करके ज़िन्दगी के हकीकी मकसद को हासिल कर सकें।

सुरिन्दर सिंह साहनी
ऐडवोकेट, लुधियाना

11-7-91

पिया दर्शन (दीदारे महबूब)

ईश्वर मिलाप के लिए सुरत (आत्मा) की बकरारी

किस विध परम द्वारा पाऊं,
किस विध पी से नैन मिलाऊं।

अनुवाद : किस अमल या तरीके से निजात मिले और किस विध से अपने प्यारे से आंख मिलाऊं।

व्याख्या : सुरत (आत्मा) की तरफ से उसकी अपनी तड़प और बेकरारी का अज़हार है कि गुरुदेव, किस ढंग से मुक्ति मिले और किस तरह प्रभु के दर्शन पाऊं। अब जानना है कि यह मुक्ति की ख्वाहिश और प्रभु दर्शन की तड़प स्वभाविक है या बनावटी। यह संसार के जानदारों के स्वभाव पर विचार करने से मालूम होता है कि मनुष्य के सिवाय जितने प्राणी हैं, वह सब अपनी-अपनी हालत में सन्तुष्ट हैं। परन्तु मनुष्य चाहे किसी भी

स्थिति में है, खुश नहीं है। वह जिस स्थिति में है उस पर खुश न होकर उससे आला हालत का तसव्वर करके दुखी हो रहा है। जैसे एक अमीर लखपति होने और तमाम प्रकार के सुख के साधनों के होते हुए भी करोड़-पति को देखकर अपने को हेच समझ कर दुखी होता है। इसी तरह करोड़पति अरबपति को, और अरबपति छोट हुक्मरानों को, और छोटा हुकमरान बादशाह को, और बादशाह दूसरे सम्राटों को देखकर दुखी होता है। इससे अंदाज़ा होता है कि मनुष्य को आत्मा को किसी बड़े सुख का अनुभव हुआ है जिसके तसव्वर में संसार के यह सुख उसे हेच नज़र आने लगते हैं और वह एक दूसरे के बाद उनको हासल करके छोड़ता जाता है और न जानता हुआ भी उससे बड़े सुख को हासल करने में लगा रहता है। यही बड़ा सुख जिसके तसव्वर में उसको संसार के सारे सुख हासल होने पर दुख ही मालूम होते हैं, जिसकी मामूली झलक ने उसे दिवाना बनाया हुआ है, मुक्ति का सुख है। अगर आत्मा को इसका अनुभव न हुआ होता तो वह एक सुख को छोड़ कर दूसरे सुख की इच्छा कभी न करता। अगर इसमें अमल होने का भाव न होता तो यह अपनी मृत्यु का विचार करके कभी भी दुखी न होता। अगर आत्मा की इस अज्ञानतम अवस्था

से बढ़ कर और आनन्दमय सुख स्वरूप अवस्था न होती तो यह भी पशु पक्षियों की तरह बेखबरी में रह कर आनन्द मनाता और कभी दुखी न होता। इससे सिद्ध हुआ कि मुक्ति की इच्छा आत्मा की स्वाभाविक इच्छा है, बनावटी नहीं है। स्वभाविक इच्छा की पूर्ति के लिए, कि जिससे तमाम तरह के दुखों का नाश हो, गुरु से कोई ढंग, तरीका या अमल पूछना निहायत ही सौभाग्य की बात है। जिनको अपने स्वरूप का कुछ ज्ञान हो गया है वही इस किसम के सवाल कर सकते हैं। दूसरे प्रकार के लोग तो व्यापार में तेजी, रोज़गार में तरक्की और मुलाज़मत में मर्तबा बनने की बात ही पूछते हैं। मुक्ति के लफ्ज़ी मायने छूटना है। छूटना किससे-दुखों से। दुख तीन प्रकार के हैं-आध्यात्मिक, अधिदेवक और अधिभूतक। इन तीनों से छूट जाने का नाम मुक्ति है। मुक्ति चार तरह की होती है 1) सालुकिया (ईश्वर के मकाम में रहना 2) सारूपिया (अपने प्रीतम जैसा बनना) 3) सामिपा (सेवक के तौर पर अपने ईश्वर के पास रहना) 4) साइजिया (प्रभु से संयुक्त हो जाना) यहां चौथी किस्म की मुक्ति की ख्वाहिश का अज़हार है। मुक्ति को 'परम द्वारा इसलिए कहा जाता है कि इससे आगे या

इससे बढ़कर कोई स्थान या जगह नहीं है और इसका मुकाबला या तसव्वर भी दुनिया की किसी आला, शानदार और बेहतर जगह से नहीं किया जा सकता। गीता में भगवान कृष्ण फरमाते हैं,

हे अर्जुन ! इस पुर नूर परम पद को न सूर्य रोशन कर सकता है, न चन्द्रमा और न अग्नि ही। उसके नूर के सामने उनकी रोशनी फीकी है और जिस परम पद को प्राप्त होकर मनुष्य फिर संसार में नहीं आता है. वही मेरा परमधाम है।

ऐसा वह परमधाम कि जिसकी तशबीह भी महाल और असम्भव है, इस परमधाम पर पहुंचने की तमन्ना का अज़हार इस पद्य में हुआ है। दूसरे पद्य में नयन से नयन यानि आंख से आंख मिलाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की गई है। आंख से आंख मिलाना मुहावरा है। इसका मतलब सुरखुरू होना है। देखा गया ह कि गुनहगार, खताकार, मुजरम, कसूरवार महापुरुषों से निगाह नहीं मिला सकते। फौरन शर्म से सिर झुका लेते हैं। लेकिन जो शुद्ध आत्मा और सात्विक वृति के मनुष्य हैं, इनमें किसी तरह की झिझक या शर्मीलापन नहीं पाया जाता। सुरत (आत्मा) या शिष्य की यह भावना है कि गुरुदेव, वह कौन से अच्छे कर्म हैं जिनके करने से मैं भगवान के

सामने सुरखरू हो सकूं। वहां मुझे शर्म से निगाह नीची न करनी पड़े।

किस विध मैं पी होवें एक,
किस विध जागे बुद्ध बिबेक।

अनुवाद : किस तरीके से मैं और प्रीतम एक हो जाएं और किस तरीके से इलम और अकल रोशन हो।

व्याख्या : क्योंकि सुरत या आत्मा को अभी तक शुद्ध ज्ञान नहीं हुआ, इसलिए वह द्वैत का आभास किए हुए है। प्रेम की इन्तहाई मंज़िल प्रीतम या प्यारे की ज़ात में जज़ब होना है। जब तक यह मर्तबा (पदवी) हासल न हो तब तक शांति नहीं होती। तड़प और जलन बाकी रहते हैं। इसलिए सुरत बेकरार होकर पुकारती है कि मैं किस इलम से अपने प्यारे की ज़ात में जज़ब होऊं क्योंकि जब तक अपने आपको अपने प्रीतम की ज़ात में फ़नाह न कर दूंगी, इश्क पूरा नहीं होगा॥

दूसरे पद्य में इलम और अक्ल की रोशनी चाही गई है। यह इसलिए कि जब तक अंधकार, अज्ञान और जहालत मौजूद हैं तब तक सच्चा इश्क नहीं हो सकता। फ़ानी चीज़ों से लगाव बना रहेगा। उनकी बे-हकीकी

समझ में नहीं आएगी। जब तक दुनियां और उसकी चीज़ें प्रेमी को हेच और बेसूद न जान पड़ें, प्रीतम या प्यारे से सच्चा लगाव नहीं हो सकता। प्रीतम से तो वही प्यार कर सकता है जो दुनियां से बेनयाज़ हो जाए। दुनियां से वही जी मोड़ सकता है जिसकी अक्ल रोशन हो। सच्चा प्रेम कमाने के लिए बुद्धि और विवेक की जागृति का ढंग पूछा गया है।

किस विध बन जाऊं मस्तानी,
छूट जाए सब आनी जानी।

अनुवाद : किस तरीके से मस्ताना बनूं और किस तरीके से जन्म मरण से बचूं।

व्याख्या : मस्त उसे कहते हैं जो हर हाल में खुश हो। दुख सुख, भूख प्यास, सर्दी गर्मी, दोस्त दुश्मन की जिसे तमीज़ न रहे। ऐसी हालत की ख्वाहिश इस लिए की गई है कि यह हालत सरूर की हालत है। क्योंकि दुख, रंज, तकलीफ या सुख, आराम, चैन, द्वंद से है। जहां द्वंद है वहां यह दोनों हालतें भी हैं। इन दोनों से जो परे है वही सच्चा सरूर है और यह सरूर मस्त को ही हासल हो सकता है क्योंकि वह इन दोनों हालतों से ऊपर उठ गया है। इसी अवस्था को प्राप्त करने के

लिए सुरत मस्तानी बनना चाहती है।

दूसरे पद्य में जन्म मरण से छूटने का ढंग पूछा गया है क्योंकि जब तक जन्म मरण हैं तब तक सुरत, आत्मा या जीव गृहस्थ में गिरफ्तार है। अन्धकार और अज्ञान का रूप जन्म मरण है। इस लिए जन्म मरण से बचने या अन्धकार अज्ञान से छूटना एक ही बात है। जिस तरह कैदी आज़ादी का ख्याल करके कैद में दुख महसूस करता और कैद से मुक्त होने की ख्वाहिश करता है, इसी तरह जीव जन्म मरण की कैद से आज़ादी हासल करने के लिए प्रार्थना कर रहा है क्योंकि कैद तो हर हालत में, चाहे इसमें किसी प्रकार का सुख भी हो, बुरी ही है।

किस विध सहज समाधि लागे,
किस विध दुख भूख सब भागे।

अनुवाद : किस साधन से सहज समाधि लगे और किस साधन से दुख और भूख दूर हो।

व्याख्या : योग शास्त्र में ब्यान हुए योग के आठ अंगों में समाधि आठवां अंग है जिसमें लीन होकर योगी परम पद को हासल कर लेता है क्योंकि यह योग की हद है। इस लिए सब की ही ज़ुबानों पर इस की चर्चा है।

संसार के सारे क्लेशों से बचने और ब्रह्म लीन होने के लिए सब समाधि की पनाह लेना चाहते हैं। इसके लिए तरह तरह के तप करते, दुख तकलीफ उठाते और पहाड़ों की गारों में रिहायश अख्तयार करते हैं। इस तरह से समाधि की हालत प्राप्त करना बहुत मुश्किल काम है। इस लिए आत्मा की तरफ से सहज समाधि की प्रार्थना की गई है यानि हर हालत और हर समय खुद-ब-खुद बगैर किसी तकलीफ और कष्ट के समाधि लग जावे अर्थात जीवन ही समाधि रूप हो जावे और व्यवहार ही परमार स्वरूप धारण कर ले। ज़िलवत में खिलवत और हरकत में ही शांति नसीब हो जावे। दुनिया को छोड़ना न पड़े और इसमें रहते हुए भी ज़िन्दगी का कमाल और हकीकी खुशी हासल हो जावे।

दूसरे पद्य में हर किसम के दुख और भूख से छूटने के लिए प्रार्थना की है। दुख तीन किसम के होते हैं— आध्यात्मिक दुख यानि जिसमानी तकलीफ, अधिभूतक जो दुख दूसरे जानवरों से अपने को पहुंचे, अधिदेवक यानि अज़हद बारिश, अज़हद तपिश, अज़हद सर्दी, मन और इन्द्रियों से होने वाला दुख यानि इन हर किसम के दुखों से मुक्ति मिले। ज़ेहनी, जिसमानी और आसमानी

दुखों और तकलीफों से छुटकारा नसीब हो। भूख से जिसमानी भूख ही नहीं बल्कि रूहानी भूख भी मुराद है अर्थात् जिसमानी और रूहानी, किसी किसम की तलब या ख्वाहिश न रहे।

किस बिध मैं मेरी सब छूटें,
किस विध कुफर अंदेशा टूटे।

अनुवाद : किस तरह से खुदी का नाश हो और शक के ख्याल न हों।

व्याख्या : अपने आप को जुदा हस्ती ख्याल करना खुदी है। खुदी में मनुष्य सब को गैर देखता है। खुद परस्त सिर्फ वजूद से ही मुहब्बत करता है और अपनी ही भलाई चाहता है। इस कारण वह अपना ही भला सोचता है और दूसरों से लड़ता झगड़ता रहता है। खुदी का जीवन चाहे कैसा ही सुन्दर नज़र आए परन्तु संसार के विरुद्ध लड़ाई का जीवन है जिस से मन में अशांति ही आती है। शांति और प्रेम कोसो दूर भाग जाते हैं। इससे ज़ाहिर है कि खुदी के नाश से ही सच्चा रूहानी जीवन प्राप्त होता है। इसको दबाने से ही मनुष्य ऊंचा हो सकता है। इस की छुटाई से ही बड़ाई प्राप्त होती है। इसके दूर होने पर ही द्वैत का नाश होता है

और सबसे अपने आप की तरह प्रेम करता है सब का भला चाहता है और किसी की बुराई का ख्याल दिल में नहीं लाता। इसी कारण सुरत ने सत्गुरु से खुदी के नाश का उपाय पूछा है। खुदी के अलावा बेदीनी और शक का नाश चाहा है। बेदीनी शक और संशय ही है। जब तक मन में शक और शुभा कायम हैं तब तक किसी बात पर यकीन कायम नहीं होता। जब तक यकीन न हो अमल नहीं हो सकता और बगैर अमल के नतीजा कहां से मिले। इस तरीके से शक्की आदमी अपना जीवन तबाह कर लेता है। इस तबाही से बचने के लिए कुफर और अंदेशे के टूटने का तरीका पूछा है।

किस बिध मन को धीरज आवे,
जीवन मोक्ष यह मनुआ पावे।

अनुवाद : मन को कैसे शांति आए और जीते जी मुक्ति मिले।

व्याख्या : मन चंचल है। समुन्द्र की तरह इसमें हर समय तरंगें उठती रहती हैं। मनुष्य नाना प्रकार की कल्पनाओं में घिरा हुआ अशांत चित भटकता फिरता रहता है। जिसके मन की विचार धाराएं जिस कदर उसके वश में हैं, वह मनुष्य उसी के अंदर सुखी और

धीरजवान है। चंचल मन का मनुष्य सदा अशांत रहता है। उसे स्वपन में भी चैन नसीब नहीं होता। इसलिए मन को निश्चल और शांत करने का उपाय पूछा है। दूसरे पद्य में जीवन मोक्ष या जिन्दा नजात के लिए इल्तजा (बिनती) की गई है। यह इसलिए कि मरने के बाद जो मुक्ति मिलेगी, इस समय तो वह कल्पना मात्र ही है। अगर इस जीवन में शांति प्राप्त न हुई, कलह और झगड़ा बना ही रहा तो मरने के बाद मुक्ति का क्या फायदा। अभी तो जीवन में ही रस और आनन्द पाने की जरूरत है। मरने के बाद यह सुख की आशा है। अगर उस सुख की झलक इस जीवन में नज़र न आई तो मरने के बाद की कौन कहे कि वह सुख कैसा होगा। मरने के बाद मुक्ति हासल करने की खुशी का तसव्वर करने की बजाय अपने आप को खुदी की कैद से आज़ाद करके जीवन मुक्त होना जरूरी है। इसी लिए जीवन मोक्ष होने की इच्छा की गई है। खुलासा मतलब इन छः पद्यों में प्रभु वियोग में तड़पती हुई सुरत की तरफ से भिन्न भिन्न इच्छाओं की सूरत में गुरु के सामने अपनी बेकरारी और तड़प को ज़ाहिर किया गया है क्योंकि सच्चे गुरु के बगैर रूहानी आनन्द की पूर्ति

मुश्किल ही नहीं बल्कि असम्भव है। सच्चे गूरु की महानता महाराज बीर इन शब्दों में फरमाते हैं,

बीरा तेरी जिन्दगी बड़ी कीमती चीज़,
इससे नफा उठाई ले गुर कोई धार अज़ीज,
जे गुर होवे उजला उजल देवे बना,
गुर चेले में बीर तब फरक न दिखे का,
गुर है रूप खुदाए का जे गुर होवे मीत,
आध व्याध मिटाए के करदे हिरदा सीत।

सच्चे गुरु को पाकर ही तपते हृदय को शांति मिलती है। इसलिए सुरत ने सच्चे गुरु की शरण पाकर अपनी धारणा अर्ज़ की है। यहां यह सवाल हो सकता है कि बारह प्रकार की इच्छा ज़ाहिर करने की जगह एक मुक्ति की इच्छा का अज़हार क्यों नहीं किया गया क्योंकि मुक्ति का सवाल हल हो जाने पर सब प्रकार की इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं। सो जानना चाहिए कि जैसे संसारी पुरुष आदर, मान, धन, ऐश्वर्य, शोहरत, बड़ाई और कई प्रकार की इच्छाएं करता है, ऐसे ही आध्यात्म संसार में प्रवेश करने पर सुरत इच्छाएं करती है क्योंकि पूर्ण ज्ञान न होने के कारण उसकी समूल इच्छाएं नष्ट नहीं हुई सिर्फ प्रवृति बदली है। जहां पहले संसारिक पदार्थों की

इच्छा थी वहां अब आध्यात्म पदार्थों की रुचि हो गई है। इस प्रवृति के अनुसार नाना प्रकार की इच्छाओं का अज़हार किया गया।

सुरत की बेकरारी पर सच्चे गुरुदेव कीं तरफ से प्रेम मार्ग की महानता और इस मार्ग पर चलने की कठिनता का बयान—

ठीक हुआ जागे तुध भागा,
इश्क पिया का तुझको लागा।

अनुवाद : अब तुम्हारी किस्मत जागी कि प्रभु के लिए प्रेम पैदा हुआ।

व्याख्या : सच्चे गुरुदेव सुरत या आत्मा की इस प्रभु मिलाप और प्रीतम प्यारे के मिलने की लग्न को देखकर आत्मा के भाग्य की सराहना करते हुए फरमाते हैं कि अब तुम्हारी किस्मत जागी है कि भगवान के मिलने का ख्याल तुम में पैदा हुआ। संसारिक लोग तो धन-दौलत मिलने, इज्जत-मरतबा पाने, विवाह शादी होने, लड़का होने, व्यापार में नफा रहने, दुश्मनों पर विजय पाने पर ही किस्मत का जागना समझते हैं। परन्तु रूहानियत में यह सब बातें तुच्छ हैं। इनकी कोई हकीकत

नहीं। जिसको यह साधन हासल हो जाते हैं वह रूहानियत में सिर्फ इन्हीं बातों के सबब इज्जत नहीं पाता। इनके न होने पर भी सिर्फ सच्चे प्रभु प्रेम के सबब खुशकिस्मत समझा जाता है क्योंकि वह अपने सच्चे इंसानी लक्ष्य की तरफ बढ़ रहा है। आत्मा का लक्ष्य प्रभु प्राप्ति है, संसारिक सुख प्राप्त करना नहीं। जो सिर्फ संसार की तरफ बढ़ता है उसे खुशकिस्मत कैसे कहा जा सकता है। खुशकिस्मत तो वही है जो कीचड़ से निकल कर सबजादार की तरफ बढ़े। जो मौत और तबाही के गढ़े की तरफ बढ़ रहा हो उसकी सराहना कैसे की जा सकती है। अमर होना, सच्चा कमाल, सच्चा आनन्द प्रभु मिलाप में है। जिसमें प्रभु मिलाप भावनाएं जागृत हुई, वही धन्य है, श्रेष्ठ है, भाग्यवान है, खुशकिस्मत है और तारीफ के काबल है।

प्रेम बिना कोई बात न होवे,
प्रेम बिना मानुष नित रोवे।

अनुवाद : प्रेम के बगैर कुछ नहीं बन सकता। इसके बगैर इन्सान हमेशा रोता है।

व्याख्या : यहां प्रेम की अपूर्व महिमा का ब्यान है। इस शब्द का और इसके बाद के शब्दों का सम्बन्ध पहले

शब्द से है। गुरु महाराज कहते हैं कि हे शिष्य ! तुझें जो प्रभु मिलने का चाव लगा है यह प्रेम की करामात है या प्रभु का प्यार। पिया का इश्क प्रेम के बगैर नहीं हो सकता या प्रभु मिलाप और ईश्वर भक्ति और उसका इश्क प्रेम के बिना नहीं हो सकता तो दुनियां का और कौन सा काम है जो इसके बिना हो जाए। दूसरे लफ्ज़ों में नहीं हो सकता। प्रेम संसार से ईश्वर तक सब वस्तुओं की प्राप्ति का साधन है। अगर साधन न हो तो साध्य वस्तु कैसे प्राप्त हो सकती है और साध्य की प्राप्ति के बिना मनुष्य को शांति नहीं हो सकती। शांति के बिना रोना, चीखना और सिर पीटना ही होता है। इसलिए कहा गया है कि जिसके पास प्रेम रूपी साधन नहीं, वह हमेशा रोता ही रहेगा और अपने इरादों में नाकामयाब रहेगा, कभी भी सफल काम नहीं होगा।

प्रेम बिना होय कुछ न पूरा,
प्रेम बिना हर काम अधूरा।

अनुवाद : प्रेम के बगैर कोई काम पूरा नहीं होता और अधूरा ही रहता है।

व्याख्या : सम्बन्ध, लगाव या प्रेम को जब तक किसी काम में न लगाया जावे, वह काम पूरा नहीं

होता। झूठ सम्बन्ध या लगाव से काम तो शुरू कर दिया जाएगा लेकिन सच्चे प्रेम के बिना इसके लिए त्याग या कुर्बानी नहीं हो सकेगी। ज़रा सी तकलीफ पहुंचने या रुकावट पेश आने पर फौरन काम से हाथ उठा लिया जाएगा। फिर और काम शुरू होगा। किसी मुश्किल पर उसका भी वही नतीजा होगा। इस तरीके से जितने भी काम शुरू होंगे, सब अधूरे रहेंगे और मनुष्य कभी भी कामयाबी का मुंह नहीं देख सकेगा। हां, जब लगाव और सम्बन्ध सच्चा होगा तो हज़ारों रुकावटें और लाख मुश्किलें आने पर भी जी न छूटेगा। यहां तक कि जान की भी परवाह न रहेगी और आखिर कामयाबी कदम चूमेगी।

प्रेम बिना मन ठौर न पाए,
प्रेम बिना कुछ समझ न आए।

अनुवाद : प्रेम के बिना मन भटकता ही रहता है और कोई बात समझ में नहीं आती।

व्याख्या : प्रेम, मुहब्बत, सम्बन्ध या लगाव के बिना मन को शांति नहीं मिल सकती। मन चंचल है। मन को शांत करना वायु को मुट्ठी में बंद करना है। इसकी मर्ज़ी पर चलने से यह कभी शांत नहीं होता। बन्दर की

तरह नाचता रहता है। करार नहीं पाता। अभी प्राप्त वस्तु पर खुश था, झट ही उससे ऊब गया। अब और वस्तु की तरफ दौड़ा। हर समय इसकी यही हालत है। मन शांत हो जाए, काबू में आ जाए तो मनुष्य जीवन में शांति का राज्य आ जाए। मन को शांत करने का साधन है "प्रेम"। इसे प्रभु प्रेम में लगा दो। प्रभु असीम है, सर्व व्यापक है, आनन्दमयी है। उसके आनन्द में डुबो दो, खूब रस लेने दो। शांत हो जाएगा, भटकना मिट जाएगी। प्रभु के आनन्द की थाह नहीं। इसलिए इसके भागने की गुंजायश नहीं रहेगी। याद रखो, प्रभु प्रेम के बिना मन किसी जगह करार नहीं पाएगा। भटकता ही रहेगा। भंवरे की तरह कभी इस फूल पर घूम फिर कर बृथा जन्म गंवा देगा। दूसरे प्रेम के बिना कोई बात समझ में नहीं आ सकती क्योंकि किसी बात के जानने, समझने के लिए एकाग्रता का होना जरूरी है। एकाग्रता प्रेम के बिना नहीं हो सकती। जब इससे नफरत है तो मन कैसे लगेगा। बगैर मन के लगे एकाग्रता होय, बुद्धि कायम नहीं हो सकती। जब बुद्धि कायम नहीं तो जानना, समझना कहां रहा। इस लिए कहा कि प्रेम के बिना आदमी कुछ सोचने समझने से आरी हो जाता है।

साचा प्रेम लगावे जोई,
उसको वस्त प्राप्त होई ।

अनुवाद : जो सच्चा प्रेम करता है वह अपने मकसद को पा लेता है ।

व्याख्या : पहले कहा था कि प्रेम बिना कोई काम पूरा नहीं हो सकता । प्रेम बिना हर काम अधूरा है । अब बतलाया कि सच्चे प्रेम से ही मकसद हासल होता है क्योंकि सच्चे प्रेम से, सम्बन्ध या लगाव से काम करने की लग्न होगी, इस लिए कुर्बानी और त्याग करने की हिम्मत होगी, हौसला बनेगा और आखिर मक़सद पूरा हो जाएगा और प्रेमी प्रीतम को पा लेगा । रूहानियत में वस्तु प्राप्ति की मुराद ईश्वर प्राप्ति है यानि जो प्राणी मात्र से प्रेम या मुहब्बत करेगा, उन्हें अपनी आत्मा के अनुकूल ही जानेगा, उनके दुख को अपना दुख अनुभव करेगा, अपने फायदे के लिए उनका नुकसान नहीं चाहेगा बल्कि उनके फायदे के लिए नुकसान सह लेगा, वही भगवान को पा सकेगा, उसे ही सच्चे प्रभु के दर्शन होंगे, वही प्रभु मिलाप का आनन्द लूटेगा ।

साचा प्रेम है जिस मन धारा,
तिस ने पाया पी का द्वारा ।

अनुवाद : जिसने सच्चे प्रेम को अपनाया, उसने ही भगवान को पाया।

व्याख्या : प्रेम दो प्रकार का होता है, सच्चा और झूठा। झूठा प्रेम मतलब के लिए होता है। जब तक कोई जरूरत है, मतलब है, कोई गर्ज़ है तब तक जान न्योछावर करने का दावा है। मतलब निकला, फिर आंख भी न मिलाना। कोई मुसीबत पड़ गई, नुकसान हुआ, बीमारी का हमला हुआ तो भजन पाठ होने लगा। मुसीबत टली, नफा हुआ, सेहत मिली तो फिर वही मार धाड़, पूजा पाठ बंद। यह सब मतलब का भाव है। प्रभु इससे नहीं रीझते। सच्चा प्रेम निष्काम, बिना गर्ज़ होता है। प्रेम करना है इसी लिए प्रेम किया जाता है। यही सच्चा प्रेम है। जो सब को भगवान का रूप समझ कर प्रेम करता है, प्रेम की शरण लेता है, प्रेममयी बन जाता है, द्वैत, दूई और खुदी को मिटा देता है उसे ही भगवान मिलते हैं, वही मुक्ति का लुत्फ उठाता है।

जिस जिस साचा इश्क कमाया,
तिस तिस परम द्वारा पाया।

अनुवाद : जिसने भगवान से प्रेम किया, उसे ही मुक्ति मिली।

व्याख्या : जिसने भगवान से लौ लगाई उसी के हो रहे, वही मुक्त हुए। दूसरे नहीं, जो दुनियां की हिरसो हवा में फंसे हुए हैं, दौलत शोहरत और इज्जत के लिए तड़प रहे हैं। दुनियावी शक्तियों के बल से मुक्ति नहीं मिलती। ताकत और हकूमत से कोई मुक्ति नहीं पा सकता और न आज तक कोई इन साधनों से मुक्ति पा सका है। गुरुदेव कहते हैं कि इतिहास के पन्ने उलटो और देखो कि जिसने भी मुक्ति पाई है, प्रभु से प्रेम करके पाई है और जिसने प्रेम नहीं किया उसे मुक्ति भी नहीं मिली।

भाग भले जब मनुवा जागे,
प्रेम और निश्चय से लागे।

अनुवाद : खुशकिस्मती है जब मन जाग कर यकीन के साथ प्रेम करने लगे।

व्याख्या : जब मन गफलत, जहालत और अज्ञान के कारण विषय बन्धनों में फंसता है तब वह बड़ा बद-किस्मत है क्योंकि वह रोशनी से मुंह मोड़ कर अंधेरे में गिर रहा है। खज़ाने को छोड़ कर ईंट पत्थर बटोर रहा है। कीमती वस्तु को छोड़ कर निकम्मी और फजूल चीज़ को हाथ डालना ही बदकिस्मती है। जब मन संसारिक

विषय वासनाओं को तुच्छ और बन्धन का कारण जान कर त्याग देता है और यकीन के साथ परम जोत को सत्य जान कर उसकी प्राप्ति में लग जाता है तब वह खुशकिस्मत है क्योंकि अब उसका कदम मौत से जिन्दगी की तरफ और झूठ से सच्च की तरफ उठ रहा है।

जिस मन जागा फिर नहीं भागा,
प्रेम लगन के गावे रागा।

अनुवाद : जो एक दफा जाग गया वह फिर नहीं सोयेगा बल्कि हर वक्त प्रेम के राग गायेगा।

व्याख्या : जिस आदमी को मुकम्मल तौर पर यह ज्ञान हो गया कि संसार के विषय वासनाएं, भोग पदार्थ सब व्यर्थ हैं वह फिर इन की तरफ ध्यान नहीं देता। मनुष्य जन्म प्रभु मिलाप के लिए है। ज्ञान की प्राप्ति और ईश्वर भक्ति के लिए वह क्यों इन वस्तुओं की कामना करेगा और सब में एक निहारने वाला क्यों द्वैत के फंदे में फंस कर दुख उठाएगा ? कभी नहीं। जो ज्ञान पाकर जागता है वह तो मस्ती के आलम में प्रेम के ही गीत गाता है। उनके लब से प्रभु भक्ति का ही तराना निकलता है। सोते में भी रोम रोम से प्रेम की झनकार निकलती है। यह तो दुनियां ही अजब और निराली है।

इसमें जाग कर कौन इस अंधेरी दुनियां में आने लगा, कोई भी नहीं।

मैं खुश हूं तोहे सुध है आई,
तुमने अपनी सुरत जगाई।

अनुवाद : मुझे खुशी है कि तुम्हें समझ आ गई और तूने अपनी आत्मा को बेदार किया।

व्याख्या : गुरु अधिकारी शिष्य को पाकर खुश हो गए क्योंकि अन-अधिकारी को ज्ञान देना बंजर जमीन में बीज डालना है। क्या कोई किसान बंजर जमीन में बीज डाल कर खुश हो सकता है। उसकी खुशी का ठिकाना तो उपजाऊ भूमि में बीज डालने पर है। यही हाल रूहानी दुनियां का है। जब गुरु को सच्चा अधिकारी शिष्य मिले तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहता। वह अपने सुरक्षित रूपी ज्ञान धन को देकर हल्के हो जाते हैं। ऐसे सच्चे शिष्य को पा कर खुशी को ज़ाहिर किया है।

पर मैं तुझको यह समझाऊं,
बार बार निश्चय करवाऊं।

अनुवाद : लेकिन मैं तुझे यह समझा कर ज़ेहन में

बिठाता हूं कि--

यह मार्ग है बहुत दुहेला,
इस मार्ग कोई विरला खेला।

अनुवाद : यह रास्ता बहुत मुश्किल है और जान पर खेलने वाला इस पर चल सकता है।

व्याख्या : प्रेम की महिमा और शिष्य के भाग्य की सराहना करके इस मार्ग की कठिनता को दिखलाते हैं। कठिनता का अज़हार भी महिमा के लिए ही है। गीता में भगवान कृष्ण फरमाते हैं, हे अर्जुन ! हज़ारों मनुष्यों में से चंद एक ही मेरी प्राप्ति की भाल करते हैं और उनमें से भी कोई ही मुझ तक पहुंचता है। उपनिषद में इस ब्रह्म विद्या का निरूपण करते हुए ऋषि फरमाते हैं कि हे शिष्य ! इस मार्ग पर चलना तेज उस्तरे की धार पर चलना है। एक और महापुरुष का वचन है,

जे तोहे प्रेम खेलन का चाओ,
सिर धर तली गली मेरी आओ।

यह सब शिष्य को लग्न की दृढ़ता के लिए है वर्ना जो इस मार्ग पर चल पड़ा उसके लिए "मुश्किल" मुश्किल नहीं रहती क्योंकि जब तक उसके मन में दुख तकलीफ और कठिनता का अहसास है वह चंद कदम भी

नहीं चल सकता। जो दुख को सुख समझेगा वही कदम पर कदम मारेगा। अगर मीरा सांप को सांप और ज़हर को ज़हर समझती तो न सांप को पकड़ती और न ज़हर पीती। प्रेम में तो ज़हरीली जानलेवा दुखदायी वस्तुओं का अहसास ही खत्म है।

इस मार्ग पर जो जो आया,
तन मन धन सब वार दिखाया।

अनुवाद : जो इस रास्ते पर चला उसने अपना तन मन धन सब कुर्बान कर दिया।

व्याख्या : यह इसलिए कहा कि अगर शिष्य के दिल में इन वस्तुओं के लिए कोई प्यार या कशिश हो तो जाती रहे। दूसरे, यह ज़ाहिर किया गया कि प्रेम के सामने यह चीज़ें तुच्छ हैं। दुनियां या उसकी चीज़ों की प्रभु प्रेम के सामने कोई कीमत नहीं। सब हेच पोच हैं। जिसने प्रभु प्रेम का प्याला पीया, उसने संसारिक पदार्थों को परे ठुकरा दिया। यहां तक कि जान की भी परवाह न की। ज़हर पीया, सूली पर चढ़े, बंद बंद कटवाया पर प्रभु प्रेम से मुख नहीं मोड़ा। धन्य है प्रेम।

तन मन धन जिस वार दिखाया,
उसने साचा प्रीतम पाया।

अनुवाद : जिसने तन मन धन की कुर्बानी की, उसने ही प्रभु के दर्शन पाए ।

व्याख्या : यहां त्याग की महिमा दिखलाई है । आज कल तन और मन की निसबत धन का त्याग बहुत कठिन है । लोगों का माया से बहुत मोह बढ़ गया है । लाखों झूठे काम और गुनाह रुपए के लिए किए जाते हैं । माया के लालच में बहुत मनुष्य जान गंवा देते हैं । मां बाप बहिन भाई और रिश्तेदारों को छोड़ देते हैं । बेइज्जती सहते हैं लेकिन पैसे को हाथ से नहीं छोड़ते । इसी तरह कोई जिस्म पर शैदा है । जिस तरह के नाच यह नचाता है, नाचता है । तमाम संसारिक पुरुष तन मन धन के काबू हैं और यह प्रकृति से हैं । जो प्रकृति से छूटे, इसको त्यागे, वही सच्चे प्रभु के दर्शन पाएगा । इसलिए प्रभु प्रीतम के लिए इनका त्याग जरूरी है यानि इनके वश में नहीं होना चाहिए और इनको ईश्वर भक्ति और प्रभु प्रेम के सामने हेच समझना चाहिए, तभी भगवान की समीपता हासल होगी ।

आला चीज़ जो कोई चाहे,
लाज़म है कुछ दुख उठावे ।

अनुवाद : कामयाबी के लिए दुख उठाना जरूरी है ।

व्याख्या : जैसे सोना भट्ठी में तपकर कुन्दन होता है और हीरा कट कर नगीना बनता है, इसी तरह आदमी सैंकड़ों मुसीबतें उठा कर कामयाबी हासल करता है। दुखों के समुन्द्र को पार किए बगैर कामयाबी नहीं मिलती क्योंकि यह कुदरत का कानून है कि जब तक हम मन चाही वस्तु के लिए त्याग और तपस्या करके अपना हकदार होना साबत नहीं करेंगे तब तक वह चीज़ हमारी निगाह से ओझल रहेगी। कुदरत के कारखाने में हर चीज़ और हर मकसद की कुछ कीमत होती है। कुर्बानी और त्याग की सूरत में कीमत अदा करनी पड़ती है। इसलिए गुरुदेव फरमाते हैं कि हे शिष्य ! अगर तू प्रभु प्राप्ति चाहता है, क्योंकि इससे आला और कोई चीज़ नहीं है, तो इसके लिए त्याग और तपस्या करना जरूरी है।

बिन तकलीफ जो मिल जाए भाई,
उसकी कदर न जाने कोई।

अनुवाद : बगैर दुख उठाए जो चीज़ मिल जाती है उसकी कुछ कदर नहीं होती।

व्याख्या : यह इन्सानी फितरत का बयान है। इन्सान को जो चीज़ बगैर मेहनत के, बगैर दुख उठाए, खुद-ब-खुद मिल जाए तो उस चीज की कोई कदर नहीं

करता और जो चीज़ कुछ देकर ली जावे, खून पसीना एक करके मिले तो उसको बड़ी हिफाज़त से रखा जाता है। खूब संभाल की जाती है। सिर्फ इस ख्याल से कि अगर यह जाया हो गई तो फिर इसी तरह मेहनत और कोशिश करनी पड़ेगी।

जिसने पाया मर के पाया,
मरन बिना कुछ हाथ न आया।

अनुवाद : जिसने मुराद पाई, त्याग और तपस्या की वजह से पाई। जिसने त्याग और तपस्या नहीं की, वह कामयाब नहीं हुआ।

व्याख्या : यहां त्याग और तपस्या की महिमा का वर्णन है। चाहे संसारिक पदार्थ हों या प्रभु प्यारे, बगैर कुर्बानी के कुछ हाथ नहीं आता। बिना त्याग किए धोखा फरेब से संसारिक पदार्थ कुछ समय के लिए तो मिल जाते हैं लेकिन आखिर छीने जाते हैं और पहले से भी ज्यादा कमी आ घेरती है। इसलिए मुराद हासल करने का एकमात्र साधन त्याग और तपस्या है। संसार में जिसने भी संसारिक या आध्यात्मिक उन्नति की है वह त्याग और तपस्या के बल पर ही की है। हाथ पर हाथ धरे और कुछ तकलीफ न उठाए बगैर किसी को कुछ

नहीं मिला।

जीवत ही जो कोई मरे,
सोई बात इश्क की करे।

अनुवाद : संसार में रहता हुआ जो इन्द्रियों पर काबू पाए, वही भक्ति और प्रेम का हकदार होता है।

व्याख्या : संसारिक पुरुष उसे ही जीवित कहते हैं जो इन्द्रियों से भोग भोगे। जो इन्द्रियों के भोग से उपराम है, उनकी निगाह में वह मुर्दा है। आध्यात्मिक संसार में विषय भोगों का त्याग करना होता है और यही जीवित मरन है यानि इन्द्रियों के रहते हुए भी भोग विलास की इच्छा का न रहना। जो जीवित या ज़िन्दा रहता हुआ अपनी इन्द्रियों पर इस कदर काबू पा ले कि इन्द्रियां उसे ज़रा भी विचलित न कर सकें और जिस तरह इन्द्रियों को चलाए, यह उसके कहने पर चलें, वही पुरुष प्रभु भक्ति या सच्चा इश्क कमा सकता है। दूसरा पुरुष नहीं, जो इन्द्रियों का दास है।

जीवन मोक्ष वही बस पावे,
वो ही पी से नैन मिलावे।

अनुवाद : वही जिन्दा नजात हासल करता है, उसे ही परमात्मा के दर्शन नसीब होते हैं।

व्याख्या : इसका सम्बन्ध इससे पहले शब्द के साथ है यानि जो जिन्दा मर जाए, वही जिन्दा नजात का हकदार है। आम मज़हबी आकीदा मौत के बाद मुक्ति मिलने का है और मौत के बाद नजात पाने के लिए तरह तरह के यज्ञ, अनुष्ठान, रोज़े, ब्रत और अनेक अभ्यास किए जाते हैं लेकिन जीवन मुक्ति की न किसी को ख्वाहिश है और न ही यह शब्द आम है। अगर ज़रा विचार किया जाए कि अगर इस जीवन में सच्चा आनन्द और लुत्फ हासल न हुआ तो मृत्यु के पीछे आत्मा को किसी प्रकार का सुख और आनन्द मिलेगा, यह कैसे ठीक साबत हो सकता है। इसलिए मृत्यु के बाद नजात हासल करने के लिए जीवन मुक्ति का हासल किया जाना जरूरी है। मोक्ष यानि दुख और तकलीफ से छूटना है। दुख और तकलीफ इन्द्रियों के विषयों का परिणाम है। जिसने पूरे तौर से भीतर और बाहर के हवास पर काबू पा लिया है, दूसरे शब्दों में जो इन्द्रियों के लिए ज़िन्दा ही मर चुका है यानि जिस तरह मुर्दे की इन्द्रियां किसी लज्ज़त या विषय की ख्वाहिश नहीं करतीं, इसी तरह ज़िन्दा इन्सान की इन्द्रियां मुर्दा हो चुकी हैं या काबू में आ चुकी हैं। वही मोक्ष को प्राप्त कर चुका है। ऐसा

होने पर उसे कोई दुख या शोक नहीं व्यापेगा। दुख का नाम उसके जीवन से मिट जाएगा। वह सर्व आनन्द में लीन रहेगा। यह अपूर्व आनन्द, यह जीवन मुक्ति मरने से पहले मर जाने में है।

पर यह बात रखो मन माँहि,
इस मार्ग बिन मुक्ति नाँहि।

अनुवाद : यह बात दिल में जमा लो कि इस तरीके के बिना मुक्ति मिलनी असम्भव है।

व्याख्या : यह ताकीदी शब्द है। प्रेम मार्ग और उसकी महिमा, इन्द्रियों, विषयों की तुच्छता और असारता बतला कर भी गुरु फिर ताकीद करते हैं कि इनके बगैर और किसी तरीके से मुक्ति नहीं मिल सकती। और सब तो ढंग हैं या सहायता के लिए अभ्यास हैं जिनसे इस मार्ग की तरफ रूचि हो लेकिन असल नहीं हैं। जो इसको असल और सही समझेगा, धोखा खाएगा। मुक्ति नहीं पाएगा बल्कि और बंध जाएगा। सच्चा तो यही प्रेम का मार्ग और मरने से पहले मर जाने का सबक है।

इस मार्ग बिन तरा न जाए,
इस मार्ग बिन चैन न आए।

अनुवाद : इस मार्ग के बिना न तो मुक्ति मिलती है और न ही शांति नसीब होती है।

व्याख्या : जब तक द्वैत, दूई, गैरत है तब तक शक, डर, ईर्ष्या और लालच का खातमा नहीं हो सकता। जब तक यह हैं तब तक बेचैनी है। अशांति और सोच फिकर का गलबा रहेगा। इससे आनन्द, चैन, सुख सब गायब हो जाएंगे। इस तरह जब तक इन्द्रियां वश में नहीं हैं तब तक मुक्ति की इच्छा कैसी ? इस समय तक तो जन्म मरण की इच्छा करनी चाहिए। इस लिए गुरु ने कहा है कि यही सच्चा और सीधा रास्ता है कि सब से प्रेम किया जाए और इन्द्रियां वश में रखी जाएं।

इस मार्ग बिन कोट प्राणी,
बिलक बिलक मोए अज्ञानी।

अनुवाद : प्रेम और इन्द्रियां संयम के बिना करोड़ों इन्सान रो-रो कर मर गए।

व्याख्या : यह शब्द ऊपर के दो शब्दों के लिए ताइदी शब्द है यानि जो ऊपर कहा गया कि इस मार्ग के बिना और मार्ग से मुक्ति नहीं तो इस की ताइद में तारीख की कितनी मिसालें पेश की जा सकती हैं कि जिन्होंने प्रेम

और इन्द्रियां संयम की परवाह न करके अपनी ताकत के बल पर आनन्द हासल करना चाहा लेकिन मरते वक्त निहायत हसरत और अफसोस, कि यही कहते रुकसत हुए—

'गलत बूद आंचे मन पंदाश्तम'

यानि गलत था जो कुछ मैंने समझा। हरनाक्ष, रावण, कंस, दर्योधन, महमूद, सिकन्दर का हाल किसने नहीं पड़ा। इन्द्रियां सुख के लिए और अपने मन चाहे तरीकों से सुख पाने के लिए उन्होंने क्या कुछ नहीं किया लेकिन मरते वक्त अगर कुछ ख्याल आया तो यही कि अब तक अज्ञानता के समुन्द्र में डूबे रहे। इस लिए रास्ता में ही भटकते रहे। जिसको मुक्ति का मार्ग समझते रहे, वह तो कैद और बन्धन का रास्ता निकला।

प्रेम मार्ग और इन्द्रियां संयम के मार्ग पर चलने की सराहना

जो जो इस मार्ग पर आया,
तिसने मुक्त द्वारा पाया।

अनुवाद : जो जो इस रास्ते पर आया उसने ही मुक्ति पाई।

व्याख्या : पहले शब्द में उस मार्ग पर न आने वाले की अवस्था बयान की। यहीं आखिर में रोना, हसरत और अफसोस करना, जन्म मरण का दुख भोगना बताया। अब इस शब्द और आगे के शब्दों में इस मार्ग पर चलने वाले की खुशकिस्मती और इसके नतीजे और अच्छे सुखों का ब्यान करते हैं। जो प्रेम और इन्द्रियां संयम के मार्ग पर चल पड़ा, वही मुक्ति या परमधाम का हकदार ठहरा। यहां से वापिसी नहीं होती और यही सुख का धाम है।

जो जो इस मार्ग पर आया,
तिसने उज्जवल नाम कराया।

अनुवाद : जो जो इस रास्ते पर चला उसका ही नाम रोशन हुआ।

व्याख्या : जो इस रास्ते पर चलता है उसका जीवन उच्च हो जाता है। जीवन में पवित्रता आने पर शोहरत होती है। उसके काम रोशनी के मिनारों की तरह रोशनी देते हैं। इस तरह से ही हज़ारों लोग उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन सुधार लेते हैं और उनका नाम उनके दिलों में चमकता है।

जो जो इस मार्ग पर आया,
दुख सुख से वह न घबराया।

अनुवाद : जो जो इस रास्ते पर आया, वह दुख सुख से नहीं घबराया।

व्याख्या : जो जो इस मार्ग पर आ जाता है वह दुख सुख से नहीं घबराता। सुख से घबराने का अर्थ अपने कर्तव्य को भूल जाना है यानि आराम मिल जाने पर भी वह जुल्मो सितम पर नहीं उतरता, मनमानी नहीं करता, गरीबों को नहीं सताता, रंजो राहत उसको अपने कर्तव्य से नहीं हटाते। वह दोनों हालतों में एक जैसा रहता है।

जो जो इस मार्ग पर आया,
ज़ात पात का फर्क मिटाया।

अनुवाद : जो इस रास्ते पर आया उसके दिल से ज़ात पात का भेद उठ गया।

व्याख्या : ज़ात पात का मूल कारण द्वैत के अलावा अपने में बड़ाई के जज़बे का होना है। प्रेम मार्ग में चलने से जहां द्वैत का पर्दा उठ जाता है वहां सब में ब्रह्म दर्शन होने से अहंकार और बड़ाई का विचार भी जाता रहता है और नीच कही जाने वाली जातियों से भी वैसा ही

उत्तम व्यवहार करता है जैसा कि आला ज़ात वालों से। महाराष्ट्र में संत एकनाथ जी एक महात्मा हो गुजरे हैं। एक दिन की बात है कुछ महार (महाराष्ट्र में महार नाम की एक अछूत जाति पाई जाती है। दूसरे लोग उनसे नफरत करते हैं। उनसे छूना तो एक तरफ, उनके साया से भी एक तरफ भागते हैं। महारों को आम सड़क पर चलने की इजाज़त उस समय नहीं थी। उनको अपनी कमर के गिर्द झाड़ू बांध कर चलना होता था ताकि उनके पांव के निशान पर किसी दविद का पांव पड़ जाने से दविद भ्रष्ट न हो जाए। उनको ज़मीन पर थूकने की इजाज़त न थी। इस लिए थूकने के लिए उनको गले में मिट्टी की हांडी बांधनी पड़ती थी) महात्मा एक नाथ के मकान के पास से गुज़रे। महात्मा जी के पितृों का शराद्ध था और ब्राह्मणों को खिलाने के लिए तरह तरह के अच्छे अच्छे पकवान पक रहे थे। पकवानों की भीनी-भीनी खुशबू चारों तरफ फैल रही थी। एक महार बोला कि भला ऐसे पकवान हमारी किस्मत में कहां ? हमें तो रूखी सूखी रोटी पेट भर कर नसीब हो जाए तो बहुत है। दूसरा बोला—सच्च है भाई, हमारा भी कोई जीवन है ? किस्मत ने हमें दुख और मुसीबतों के ऐसे पहाड़ में

झोंका है कि सिवाय आहो ज़ारी के हम और कुछ कर ही नहीं सकते। हाय! भगवान यह किन गुनाहों की सज़ा है? सारे महार अपनी किस्मत का गिला शिकवा कर रहे थे। उन्होने महारों की बातचीत सुन ली थी और हमदर्दी और मुहब्बत की लहरें उनके दिल में हिलोरे मार रही थीं। उन्होंने कहा, भाईयो! क्यों रंजीदा होते हो। आओ, अंदर चले आओ। आज मेरे पितृों का शराद्ध है। यह पकवान बने थे ब्राह्मणों के लिए, अब यह उन्हें नहीं मिलेंगे। मेरा विचार है कि तुम लोगों को भोजन कराने से मेरे पितृ ज्यादा तृप्त होंगे। महात्मा एकनाथ ने जनता में जनार्धन है, कहकर संकल्प छोड़ दिया। भगवान की भक्ति में आकर मनुष्य ऐसा शुद्ध संकल्प हो जाता है जैसा कि महात्मा एक नाथ जी का।

जो जो इस मार्ग पर आया,
तिस ने असली मकसद पाया।

अनुवाद : जो जो इस रास्ते पर आया उसने अपना असली मकसद पा लिया।

व्याख्या : जीव का दुनियां में आने का असली मकसद ईश्वर प्राप्ति है। जो प्रेम और त्याग को अपना लेता है वही ईश्वर प्राप्ति करता है। विषय के सुखों को

चाहने वाला और खुदगर्ज़ इस मकसद को हासिल नहीं कर सकता।

जो जो इस मार्ग पर आया,
तिसने मूल अपना पाया।

अनुवाद : जो इस रास्ते पर आया उसने ही अपनी असलीयत को जाना।

व्याख्या : जैसे शीशे पर गर्द छा जाने से चेहरा नज़र नहीं आता या गदले पानी में जैसे सूर्य दिखाई नहीं देता, ऐसे ही दुनियां की हिरसो हवा में फंसे हुए खुदगर्ज़ आदमी को अपनी असलीयत का ज्ञान नहीं होता यानि वह सत् चित् आनन्द स्वरूप होता हुआ भी अपने आप को बंधा हुआ दुखी समझता है। अमर होता हुआ भी मृत्यु का ग्रास समझता है। नाश रहित आत्मा को नाशवान जान कर रोता है। भगवान को न जान कर अपने अहंकार में ही डूबा रहता है। परन्तु जो प्रेम और त्याग के रास्ते पर चल पड़ता है उसे मालूम हो जाता है कि मैं नाशवान नहीं हूं बल्कि अजर अमर हूं। दुखी नहीं हूं, आनन्द स्वरूप हूं। मैं अपने शरीर तक ही माहदूद नहीं हूं बल्कि सारे ब्राह्मण्ड में ही समाया हुआ हूं।

जिसने मूल अपना पाया,
प्रीतम जलवा उसे दिखाया ॥

अनुवाद : जिसने अपनी हसीयत को समझा, भगवान ने उसे ही दर्शन दिए ।

व्याख्या : जो अपनी असलीयत को समझ गया वह संसार से ऊपर उठ गया । जैसे आदमी जवान हो कर मिट्टी के खिलौनों की असलीयत को जान कर उन से नहीं खेलता और उसकी समझदारी को देखकर दुनियां की तरफ से और जिम्मेवारी के काम मिल जाते हैं । इसी तरह जो अपनी असलीयत को कि मैं अजर, अमर, अविनाशी, शुद्ध सत् चित् आनन्द स्वरूप हूं, जान जाता है फिर उसे भगवान अपना जलवा दिखाते हैं यानि उसे महसूस हो जाता है कि मैं और भगवान एक ही हैं । जलवा यहां अनोखी बात मालूम हो जाने के मायनों में है और जलवा का अर्थ रोशनी और नूर की झलक भी है । दोनों अर्थों को ही समझ लिया जावे, सही ही है । यानि अपनी असलीयत समझने पर भगवान के नूर की झलक नज़र आ जाती है या यह अनोखी बात मालूम होती है कि मैं और भगवान एक ही हैं ।

गुरु की तरफ से भगवान मिलाप की अपार महिमा

को सुन कर सुरत का अपनी बहुत ही बेकरारी और तड़प का अज़हार करना।

सुन यह वचन सुरत झट बोली,
पिया प्यारे के मैं घोली।

अनुवाद : यह बातें सुन कर सुरत झट बोल उठी कि मैं भगवान की दासी हूं।

व्याख्या : प्रेम की अपार महिमा और भगवत भक्ति की बातें सुन कर सुरत बिना रोक टोक फौरन ही कह उठी कि मैं तो भगवान की दासी हूं। झट बोल उठने से मतलब यह है कि जो कुछ गुरुदेव ने कहा, इसमें सुरत को कुछ संदेह या शक नहीं रहा क्योंकि जब किसी बात पर यकीन न आए या शक बना रहे तो उसके लिए हां नहीं कही जा सकती और जो बात सच्च होती है वह मन में फौरन ही खुब जाती है और बेअख्तयार मुंह से मान लेने के शब्द निकल आते हैं और जब सुरत अधिकारी हो, प्रेम की प्यासी हो, फिर तो उसकी ज़ुबान से बेअख्तयार यह शब्द निकलते हैं। यहां भी ऐसा ही ज़ाहिर किया गया है। गुरु से भगवत् भक्ति की बातें सुनते ही सुरत ने अपने आप को भगवान के चरणों में डाल दिया और

निहायत अधीनगी से अपने आप को बतौर गोली (दासी) के पेश कर दिया।

बिन पिया मैं बड़ी अयानी,
बिन पिया मैं अन्धी कानी।

अनुवाद : प्रभु के बिना मैं बेसमझ हूं और कुछ दिखाई नहीं देता यानि अन्धी और कानी हूं।

व्याख्या : गुरु कृपा से जब असलीयत का ज्ञान हुआ, दुनियां नज़रों से उतर गई। भगवत् भक्ति और सच्चे गुरु मंत्र की अपने में कमी देखी तो सुरत अपनी बेहाली और कमी का ख्याल करते हुए कहती है कि भगवान के बिना मैं ऐसे हूं जैसे अन्धे और काने होते हैं, जिन्हें दुनियां में कुछ नहीं सूझता, जो दर दर की ठोकरें खाते रहते हैं और बहुत बेसमझ हों जैसे बच्चा नादान होता है। संसारिक पुरुष तो भगवत् भक्ति से बेमुख दुनियां के साज़ों सामान, रिश्तेदारों और मित्रों के सहारे अपने आप को अकलमंद और समझदार जानते हैं लेकिन जिन की निगाह में इन चीज़ों की कोई कीमत न हो और पूर्ण भक्ति का भी अभी प्रकाश न हुआ हो, वह तो अपनी कमी को महसूस करके गुरु शरण में जा कर प्रार्थना करते

हैं कि महाराज ! हम तो प्रभु के बिना अन्धे कानों के बराबर है।

बिन पिया मेरा रूप अन्धेरा,
पो बिन लगे न कछु भलेरा।

अनुवाद : प्रभु के बिना मेरा सुन्दर स्वरूप भी करूप है और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

व्याख्या : दुनियां के लोगों की नज़र में खूबसूरती का मयार, चेहरे के रंगों निखार और सुडौल अंगों पर है लेकिन जिनको प्रभु के रूप की झलक दिख गई है और उनकी मन मोहनी शक्ल हृदय में बस गई है, उन्हें जाहिरी हुस्न कब पसंद आता है। उनके लिए इस रंग रूप में कोई रुचि नहीं। इस लिए सुरत कहती है कि चाहे मैं दुनियां की निगाह में रूपवान हूं पर मेरी निगाह में प्रभु के बिना यह रूप ऐसा है जैसा कि रूपवानों की निगाह में दुनियां की बदशक्ल सूरतें। यही नहीं, दुनियां भर की हसीन चीज़ें प्रभु के बिना मुझे फीकी नज़र आती हैं। यह इस लिए कि अब सुरत का अपने रूप का मयार बदल चुका है। हज़रत याकूब ने अपने एक नौकर को एक चीज़ दे कर कहा कि इसे सकूल में जाकर यूसफ को दे आओ। नौकर नया था। उसने पूछा कि मैंने यूसफ

को नहीं देखा, उसकी पहचान बतला दीजिए। हज़रत याकूब ने फखरिया लहज़े में फरमाया कि सब बच्चों में जो तुम्हें ज्यादा खूबसूरत नज़र आए उसे यह चीज़ दे देना। नौकर गया और अपने काले कलोटे बेटे को वह चीज़ दे आया। यूसफ जब सकूल से वापस आया तब हज़रत याकूब को इलम हुआ कि वह चीज़ यूसफ तक नहीं पहुंची। फौरन नौकर को बुलाया और दरआफत हुई। नौकर ने हाथ जोड़ कर कहा कि मेरी निगाह में मेरे बच्चे से ज्यादा और कौन खूबसूरत हो सकता है। यूसफ आपको खूबसूरत मालूम होता है लेकिन मेरी निगाह में मेरे बच्चे के मुकाबले में उसकी कुछ भी खूब-सूरती नहीं। ऐसे ही जब रूप का मयार बदल गया तब सुरत ने कहा कि इन हसीन शक्लों व चीज़ों के लिए प्रभु के बिना मेरे लिए मन में कोई चाह नहीं।

पी बिन हार शिंगार न भावे,
पी बिन लुत्फ न हरगिज़ आवे।

अनुवाद : प्रभु के बिना ज़ुबायश और बनावट अच्छी नहीं लगती और न ही संसारिक भोगों में मज़ा आता है।

व्याख्या : शरीर, मकान और जगह की ज़ुबायशो बनावट और अच्छे अच्छे पदार्थों के खाने, छूने, सूंघने,

देखने का मज़ा इंद्रियों के साथ है। जब तक इंद्रियों का लगाव इनसे है तब तक इनसे तसकीन, शांति हासल होती है और मज़ा मिलता है। लेकिन जब भगवत् भक्ति की चाट लगती है फिर यह सब बेलुत्फ हो जाते हैं, इनमें कोई मज़ा नहीं रहता। सुरत की धारना भगवत् की और है इसलिए उसका यह कथन सत्य है कि अब तो मुझे दुनियां की यह बनावट और ज़ुबाइश एक आंख भी नहीं भाती और न कुछ भोग पदार्थों में लुत्फ है।

पी पाया तो सब कुछ पाया,
पी पाया तो मन तृप्ताया।

अनुवाद : प्रभु मिल गए तो सब कुछ मिल गया और मन में कोई भूख न रही।

व्याख्या : यह भगवत् भक्ति की महिमा और सच्चे प्रेम का अज़हार हैं कि प्रभु के बगैर संसार की कोई भी चीज़ निगाह में नहीं जचती या उसी में सबका समान रूप है कि भगवान मिल गए तो सब कुछ मिल गया क्योंकि सब का आधार भगवान ही हैं और मन भी शेर हो गया यानि तृप्त हो गया क्योंकि मन को अब भटकने की कोई जगह ही नहीं रही क्योंकि संसारिक वस्तुओं की थाह पाकर और वस्तुओं की चाह करने लगता था।

जब थाह न मिले तो और की इच्छा भी नहीं रहती।

पी बदले में सब कुछ वारूं,
सच्चा इश्क पिया का धारूं।

अनुवाद : प्रभु का सच्चा प्रेम कबूल करके उसके बदले में सब कुछ कुर्बान कर दूं।

व्याख्या : प्रभु सब निधियों की निधि हैं, सब आधारों का आधार है, सत् चित् आनन्द है और सब वस्तुएं अनित्य और परिणाम में दुख रूप हैं। इसलिए प्रभु के वास्ते या प्रभु पाने के लिए इन सब अनित्य दुख-दायी वस्तुओं और पदार्थों को त्याग देना कोई बड़ी बात नहीं। जो लोग प्रभु के सत्य स्वरूप और संसार की अनित्यता को जान गए हैं वह कब भोगों की परवाह करते हैं। उनके सामने यह सब तुच्छ हैं। इसलिए सुरत ने कहा कि मैं इन सब चीज़ों को कुर्बान कर दूंगी और प्रभु का इश्क मन में धारूंगी।

मन पतंग पिया दीप बनाऊं,
जल कर उस मांहि मिल जाऊं।

अनुवाद : प्रभु को चिराग (दीपक) और अपने मन को परवाना बना कर उसमें ही मिल जाऊंगी।

व्याख्या : यह प्रेम की आखिरी मंज़िल और सच्चे प्रेमी की आखिरी तमन्ना या ख्वाहिश है। परवाना दीपक पर कुर्बान हो जाता है। यही मयार सुरत के सामने है लेकिन इसमें एक विलक्षणता है। परवाना दीपक पर कुर्बान हो कर अपनी कुर्बानी का सबूत तो दे देता है लेकिन दीपक पर उसकी कुर्बानी का कुछ असर नहीं होता। लेकिन प्रभु रूपी परवाना कुर्बान होकर अपनी हस्ती ज़ाया नहीं करता बल्कि यह दीपक उसको अपने में जज़ब करके अपनी सी ज्योति बना देती है क्योंकि इस कुर्बानी में अपनी हस्ती मिटने का डर नहीं। इसलिए प्रभु के सच्चे आशिक प्रभु पर कुर्बान होने की तमन्ना करते हैं।

बिन मिले मोहे चैन न आवे,
बिलक बिलक मनुवा तड़पावे।

अनुवाद : प्रेम मिलाप के बिना मुझे शांति नहीं। जुदाई में यह मन बिलख बिलख कर रोता है।

व्याख्या : प्रभु भक्त को संसार के पदार्थों और व्यवहारों से कोई दिलचस्पी नहीं रहती। इसलिए जगत के यह पदार्थ उसे सन्तोष नहीं कर सकते। उसे तो उनसे परे जो शुद्ध आतमा है, उससे ही गर्ज़ है। वह मिले तो

चैन पड़े। जब तक नहीं मिलता, जुदाई में रोना ही रोना है।

मैंने अब तो इश्क कबूला,
अब तक यह मनुवा था भूला।

अनुवाद : अब तक तो मैं गफलत में थी लेकिन अब प्रभु का इश्क कबूल कर लिया।

व्याख्या : जब तक संसार और उसके पदार्थों में मन फंसा हुआ है तब तक यह मन भूला हुआ है। जब यह ज्ञान हो गया कि यह धोखा ही धोखा है, तब प्रभु की तरफ प्रेम बढ़ता है और समझ में आता है कि अब तक तो अंधेरे में ही सिर फोड़ रहे थे। दूसरे प्रेम और सत्य की महिमा सुनकर सुरत गुरुदेव से कहती है कि महाराज, आपकी कृपा से प्रभु प्रेम में रंग गई, उसका इश्क लग गया। इस सत्संग से पहले यह मन भूला हुआ था, गफलत में था।

लाख दुख जो मुझ पे आवें,
हरगिज़ मुझ को न घबरावें।

अनुवाद : लाख मुसीबतें भी मुझे इस प्रेम के रास्ते से नहीं डगमगा सकतीं।

व्याख्या : प्रेमी अपने प्रेम में पूर्ण है, इस जांच के

लिए हज़ारों रुकावटें उसके पेश आती हैं लेकिन सच्चा भक्त कभी नहीं डगमगाता। वह परम जोत के प्रेम में साबित कदम रहता है क्योंकि संसारिक दुख सुख उसके सामने कुछ कदर नहीं रखते और वह समझता है कि जैसे रोशनी के सामने अंधेरा नहीं टिक सकता, ऐसे प्रभु प्रेम के सामने दुख सुख या दुनियावी इम्तहान पैर नहीं मार सकते। प्रहलाद पहाड़ से गिराया गया, आग में जलाया गया, मीरा बाई को ज़हर का प्याला पोना पड़ा, मन्सूर को सूली पर चढ़ाया गया, मोरध्वज ने अपने लड़के के सिर पर आरा चलाया, हरीश चंद्र ने भंगी की नौकरी की लेकिन घबराए नहीं क्योंकि उन्हें सच्चाई का ज्ञान हो चुका था और सच्चे प्रेम का प्याला पी लिया था।

सदा आनन्द रहूं मन मांहि,
इश्क पिया का छूटे नांहि।

अनुवाद : सदा खुशी ही बनी रहे और प्रभु का प्रेम न छूटे।

व्याख्या : इसका सम्बन्ध पहले शब्द से है यानि प्रभु प्रेम में लाख दुख और मुसीबतें आने पर मैं घबराऊंगा नहीं बल्कि हमेशा आनन्द में रहूंगा। दुख को भी सुख ही समझूंगा और दुख सुख से ऊंचा उठ कर किसी से

PRABHA AMBALLIA LIBRARY M

रुचि या नफरत न होगी बल्कि जो इससे ऊपर की हालत है जिसे खुद मस्ती का आनन्द कहते हैं इसमें ही मग्न रहूंगा और प्रभु का प्रेम या इश्क किसी हालत में भी नहीं छूटेगा। दूसरा अर्थ ऐसे भी हो सकता है कि सुरत ने गुरु से अपने पक्के इरादे का अज़हार करके प्रार्थना की कि महाराज ! आपकी ऐसी कृपा हो कि हमेशा मन में आनन्द ही बसा रहे। संसार की कोई घटना दुखी न कर सके। आपकी कृपा से जो परम जोत का प्रेम बना है, यह न छूटे। सदीव काल ही बना रहे क्योंकि इससे आला और कोई चीज़ नहीं है।

प्रेम मुक्त खुद मुक्ति देवे,
भाग भले जो इसको लेवे।

अनुवाद : प्रेम चूंकि खुद मुक्त है इस लिए जो धारण करता है उसे मुक्ति देता है। वह खुशकिस्मत है जो इसे कबूल कर लेता है।

व्याख्या : प्रेम क्योंकि भगवान का रूप है और सच्चे प्रेम में कोई गर्ज़ नहीं होती, इस लिए जो इसे धारण करता है वह भगवान का रूप ही बन जाता है और जन्म मरण से बच कर हमेशा के लिए जीवन मुक्त हो जाता है। जो खुशकिस्मत मनुष्य इसको अपने अन्दर पैदा कर

लेता है वह परम आनन्द प्राप्त करके जिन्दगी का अमली सरूर हासिल करता है। जैसा कि,

मुझे मालूम है यह इश्क क्या क्या कर नहीं सकता,
यह पैदा हो नहीं सकता पैदा हो कर मर नहीं सकता।

आज सौगन्ध मैं साची खाऊं,
पी बिन सब कुछ ही बिसराऊं।

अनुवाद : आज मैं सच्ची सौगन्ध खा कर कहती हूं कि पिया (परमात्मा) के बिना सब कुछ भूल जाऊं।

व्याख्या : इस शब्द में सुरत की तरफ से अपनी सच्ची तड़प, भावना, दिल की सफाई और दृढ़ता का अज़हार है कि महाराज, आपने प्रेम की महिमा और प्रभु भक्ति का जो वर्णन किया है, उसको मैंने सच्चे मन से स्वीकार कर लिया है और इसके अज़हार के लिए सच्ची कसम खाती हूं। कसम दो प्रकार की होती है सच्ची और झूठी। झूठी कसम धोखा देना और मतलब हल करने के लिए उठाई जाती है और सच्ची कसम सिर्फ अपनी सफाई के लिए ली जाती है। अगरचे कसम का खाना बुरा समझा जाता है लेकिन किसी को सच्ची बात मनवाने के लिए इसका प्रयोग ठीक समझा जाता है। यहां सुरत प्रभु वियोग में व्याकुल हुई उसके जल्द

मिलने के चाव में कसम खाती है और साथ ही निहायत सादगी से कहती है कि महाराज, यह कसम सच्ची है। सादगी और दिल की सफाई तक ही खत्म नहीं हो जाती बल्कि अगले शब्द में इसके सबूत में अपने भविष्य के अभ्यास का भी ब्यान किया कि मैं प्रभु के बिना सब कुछ बिसरा दूंगी, यानि दुनियां और उसके पदार्थों को ठुकरा दूंगी, भूल जाऊंगी और उनकी परवाह नहीं करूंगी।

मेहर कमाओ, मेहर कमाओ,
साची दासी मोहे बनाओ।

अनुवाद : मेहरबानी कीजिए और मेहरबानी कीजिए और मुझे अपने अकीदतमंदों में शामिल कीजिए।

व्याख्या : अकीदतमंदी के अज़हार के बाद यहां अपनी बेचारगी का जिक्र किया है कि जब मनुष्य अपनी कोशिशों और सिफारशों से मायूस हो जाता है फिर रहम की अपील करता है। वह अपने आप को निहायत तुच्छ कमज़ोर, खताकार समझ कर और कोई चारा न देख कर उसके चरणों में डाल देता है। जिस समय ऐसी हालत में आत्म समपर्ण किया जाता है फिर मनुष्य ठुकराया नहीं जाता, हृदय से लगा लिया जाता है। सुरत ने अपनी तमाम संसारिक कोशिशें जो प्रभु मिलाप

के लिए की जा सकती हैं, अर्ज़ कीं और आखिर खुद ही इस नतीजा पर पहुंची कि आत्म सम्पर्ण के बिना कोई इलाज नहीं। इस शब्द में अपने आप को ही भेंट में पेश कर दिया और गुरु की मेहर की पालना और दयालता की दुहाई दी।

पी का द्वारा जल्द दिखाओ,
मैं हारी अब न अज़माओ।

अनुवाद : प्रभु दर्शन कराइए। मैंने हार मान ली अब और न अज़माओ।

व्याख्या : इस शब्द में व्याकुलता ज़ाहिर की गई है कि महाराज, शब्द दान दीजिए, प्रभु मिलाप कराइए। बहस मुबाहिसा (वाद विवाद) में भी मैंने हार मान ली और दूसरे साधनों से यानि गुरु कृपा के बिना जितने साधन हैं, उनका जो भी भरोसा था उसमें भी मैंने अपनी गल्ती मानी और बस और न अज़माईश कीजिए। अब और अज़माईश की जरूरत नहीं रही क्योंकि जिनका सहारा था वही छोड़ दिया।

पी बिन जीवन जीवन क्या है,
अब यह मैंने समझ लिया है।

अनुवाद : अब मैं जान गई हूं कि प्रभु के बिना यह

जीवन बृथा है।

व्याख्या : यह शब्द भी पहले शब्द की पुष्टि में कहा गया है कि अज़माईश की ज़रूरत इस लिए भी नहीं है कि मैं इस सच्चाई को अच्छी तरह समझ गई हूं कि प्रभु के बिना या भक्ति के बिना यह जीवन बृथा है। अज़माईश उस समय तक है जब तक शिष्य के दिल में संसार और उसके पदार्थों के लिए कशिश बाकी है। जब उस तरफ कोई रुचि ही नहीं रही फिर अज़माईश की क्या ज़रूरत है। यह सुरत की तरफ से आत्म सम्पर्ण है क्योंकि जब तक दुई खत्म नहीं होती तब तक गुरु मेहर नहीं करते। जिसने यह समझ लिया वही गुरु की कृपा का हकदार ठहरा।

मिले पिया तो बनूं सुहागन,
बिन पिया मैं एक अभागन।

अनुवाद : प्रभु मिलाप हो तो खुश किस्मत हो जाऊं वर्ना मैं निहायत ही बदकिस्मत हूं।

व्याख्या : सब कुछ कह चुकने और आत्म सम्पर्ण के बाद यह आखरी बिनती है कि जैसे स्त्री अपने पति की समीपता में निहायत मसरूर रहती है और निहायत

खुशकिस्मत समझी जाती है और पति न रहने या विधवा बन जाने पर दुखी हो जाती है मनहूस समझी जाती है, इसी तरह जब आपकी कृपा से प्रभु प्राप्ति होगी तब मैं सुहागन यानि खुशकिस्मत बनूंगी। बिना प्रभु प्राप्ति के मैं दुखी और मनहूस हूं। इतना कह कर सुरत ने अपने आप को गुरु के चरणों में डाल दिया और वाद विवाद के लिए कोई गुंजाइश न रहने दी।

साधन मार्ग

शिष्य की परीक्षा की आखिरी कसौटी आत्म सम्पर्ण है। जब शिष्य वहम भ्रम से ऊपर उठ कर अपने आप को गुरु के चरणों में डाल देता है तब सच्चे ज्ञान का अधिकारी होता है। यह अवस्था आती ही वहम भ्रम से दूर हो कर है क्योंकि जब तक वहम भ्रम रहेंगे, खुदी बनी रहेगी और खुदी के होते हुए आत्म सम्पर्ण कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। इससे पहले प्रकरणों में शिष्य की प्रथम वृति यानि प्रभु मिलाप की इच्छा और उसके लिए त्याग की भावना का वर्णन हुआ और इसके बाद आत्म सम्पर्ण। आत्म सम्पर्ण के बाद गुरु शिष्य को साधन की शिक्षा देते हैं। सो यहां अब साधन की व्याख्या

प्रारम्भ होती है।

अब मैं तुझ को सब समझाऊं,
तेरे सोए भाग जगाऊं।

अनुवाद : अब मैं तुझे असल साधन बतलाता हूं जिस से तुझे सच्चा ज्ञान हो जाएगा।

व्याख्या : इससे पहले गुरु महाराज सुरत को उस ज्ञान की महिमा ही बतलाते रहे लेकिन जब शिष्य ने श्रद्धा के साथ अपने आप को गुरु चरणों में डाल दिया तब गुरु ने अधिकारी देख कर कहा कि अब मैं तुझे साधन मार्ग पर लाता हूं जिससे तेरा सोया हुआ भाग्य जाग जाएगा क्योंकि जब तक सच्चा ज्ञान न हो, इन्सान का भाग्य सोया हुआ ही है। उसकी खुशनसीबी धन दौलत, पदवी और हकूमत से नहीं बल्कि उसका परम सौभाग्यवान होना तो सच्चे ज्ञान से है। जब सच्चा ज्ञान हो गया तो समझो क़िस्मत जाग उठी वर्ना बदकिस्मती ही बदकिस्मती है।

गुप्त खज़ाना दूं बतलाए,
किस्मत वाली बन के पाए।

अनुवाद : छिपा हुआ खज़ाना बतलाऊंगा जिसको

पाकर तू खुशकिस्मत हो जाएगी ।

व्याख्या : गुरु बतलाते हैं कि अब वह सच्चा साधन बतलाऊंगा जिसको अभ्यास में लाकर तू खुशकिस्मत कहलाएगी क्योंकि सच्चे साधन में ही खज़ाने छिपे हुए हैं। जिस तरह संसारिक लोग अपनी दौलत को छिपा कर रखते हैं इसी तरह सच्चे महात्मा भी साधन को गुप्त रखते हैं, इसलिए कि अन-अधिकारियों के हाथ न पड़ जाए और उत्तम वस्तु, कीमती चीज़ छिपा कर ही रखी जाती है। जैसे कोई गरीब आदमी किसी छिपे खज़ाने को पाकर अमीर बन जाता है और उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता, इसी तरह साधनहीन आत्मा सच्चे गुरु से साधन पाकर निहाल हो जाती है और फिर उसे किसी चीज़ की कमी नहीं रहती। यहां फिर उस ज्ञान की महिमा है। साधन दीक्षा से पहले उसकी महिमा बतला कर शिष्य का हौसला और चाव बरकरार रखना है।

प्रीतम तेरा पास बसावे,
सूक्ष्म दृष्ट जो हो जावे।

अनुवाद : तेरा प्यारा (महबूब) तेरे पास ही है, शर्त यह है कि निगाह सूक्ष्म हो।

व्याख्या : यह साधन की पहली रमज़ है। प्रीतम,

प्यारा, महबूब, प्रभु जो कुछ भी कहिए, वह खुद सुरत के पास ही है। कहीं दूर नहीं है लेकिन यह बात तब समझ आती है जब निगाह बारीक हो। इस शब्द में ज्ञान की महिमा है या यह समझिए कि साधन मार्ग में पहले ज्ञान का होना आवश्यक है। जब तक ज्ञान नहीं होगा, प्रभु का अपने पास ही होना सिद्ध नहीं होगा। कहने को सब यही कहते हैं कि भगवान सब जगह मौजूद है। अपने में इसे टटोलो। लेकिन कितने हैं जिन्होंने इस बात का अनुभव किया है। जब तक अनुभव न होगा, निगाह बारीक न हो, यह तत्व समझ में नहीं आ सकता। सिर्फ सुरत ज्ञान तक माफ़ूज़ रहती है जिसमें शक का होना जरूरी है क्योंकि शक का रफा होना साक्षात के बिना नहीं होता। यह तो सिद्ध है कि प्रीतम सब जगह मौजूद हैं। उसको अपने में ही ढूंढना चाहिए। गुरु हमेशा से यही उपदेश देते आए हैं। महाराज बीर जी भी यही फरमा रहे है,

प्रीतम तेरा पास तेरे है, बाहर क्यों तूं जानी ऐं।
नाभ कमल कस्तूरी महके, क्यों न खुशबू पानी ऐं।
उसदी सार न जानन दे बिन, डको डोले खानी ऐं।
'बीरा' प्रेम रूप तू हो जा, जेकर उसनूं चाहनी ऐं।

लेकिन साधन छिपा हुआ होता है। यहां पर बीर

जी ने सूक्ष्म दृष्टि की प्राप्ति का साधन भी ब्यान कर दिया है। यह संत जी का कमाल है। छिपी हुई बात को छिपो हुई न रहने दिया। साधन भी ज़ाहिर कर दिया। वह साधन क्या है–प्रेम का साधन है। अपने जीवन से खुदी को गंवाइए। नफरत और द्वैत का ज़हर खारज कर दीजिए। निगाह बारोक हो जाएगी। निगाह बारीक देखने वाली हुई तो अपने में ही प्रीतम प्यारे नज़र आएंगे।

तब तू देखे अपना आप,
आप करे फिर अपना जाप।

अनुवाद : तू अपने आपको ही सब जगह जलवागर पाएगा और अपना ही जाप करेगा।

व्याख्या : जिस समय सूक्ष्म दृष्टि हो जाती है और मनुष्य हकीकत की रोशनी में अपनी सूक्ष्म वृति के द्वारा यह जान लेता है कि प्रभु बाहर होने की जगह अंदर ही हैं तो यह भेद खुलता है कि अन्तर आतमा या भगवान दो चीज़ें नहीं हैं बल्कि जो अन्दर है वही बाहर है। जब अपनी ही जोत हर जगह नज़र पड़े फिर किसी की भक्ति करने या हजूरी में जाने की ज़रूरत नहीं रहती। वह अपने आप ही मस्त होकर अपना ही जाप करता है।

शिबली को जब यह हालत नसीब हुई तब आपने उच्चारण किया कि—

मन खुदायम मन, मन खुदायम मन खुदा।
फारगम अज़ किबरो अज़ कीनो हवा।

अर्थात मैं ही परमेश्वर हूं, मैं ही परमेश्वर हूं, मैं ही परमेश्वर हूं। मैं गरूर गुस्सा और लालच से फारग हो गया। इसी मस्ती पर मेहर के कलाम में से सुनिए,

नूर से पुरनूर मेरे शश जहात,
नूर से मेरे मनव्वर कायनात।

अर्थात मेरे ही नूर से छः दिशाएं पुरनूर हैं। मेरे ही नूर से दुनियां ज्योति स्वरूप हो रही है।

गैर कोई तोहे नज़र न आवे,
सब में पी का रूप दसावे।

अनुवाद : अपने से दूर कोई और दूसरा तुझे नज़र नहीं आएगा। सबमें उसी का नूर देखेगा।

व्याख्या : असलीयत का ज्ञान न होने के कारण लोग इधर उधर भटकते हैं। असल में हर एक में उसी परमात्मा की ज्योति है और जो कुछ भी है, हर वस्तु आत्मा ही है। आत्मा के बिना कुछ नहीं। इस सूक्ष्म

विषय को श्री महाराज बीर ने अपनी बाणी 'आपे आप' में इस तरह वर्णन किया है,

सारी रचना आप साज के, आपे हुक्म चलाता है।
घर-घर अन्दर आप वास कर, आपे बात कराता है।
आपे माया छाया करके, माया जाल बिछाता है।
आपे माया देखभाल के, खुश हो हो कर गाता है।
आपे सगल पदार्थ रच के, आपे ही फिर खाता है।
आपे राजा आपे योगी, आपे भोग भगाता है।
आपे प्रीतम आपे प्रेमी, आपे प्रेम कमाता है।

सूक्ष्म दृष्टि होने पर सबमें पिया का जलवा नज़र आने लगता है और यह पिया भी कोई बाहर की वस्तुएं या तलाश की चीज़ नहीं रहती बल्कि अपनी ही ज्योति है यानि तत्व ज्ञान होने पर सब जगह अपना ही नूर दिखाई देता है। अपना ही नूर नज़र आने पर द्वैत मिट जाती है।

पी से मिलकर मौज मनावे,
दो से एक रूप हो जावे।

अनुवाद : प्यारे से मिलकर खुशी मनाएगी और जोत में जोत मिलकर एक जोत हो जाएगी।

व्याख्या : खुदी और द्वैत के नाश होने पर एक रूप हो जाएगी और अपने प्यारे से मिलकर बहुत खुशी और आनन्द हासिल होगा। द्वैत में जो खुशी और आनन्द है, वह जुदाई के खौफ के परदे में लिपटा हुआ है क्योंकि द्वैत में दुई (अलायदगी) लाज़मी है चाहे कितनी देर बाद ही क्यों न हो ? जब आनन्द की समाप्ति है फिर ज्ञानी को इस आनन्द के प्रारम्भ यानि शुरू में कैसे खुशी हो सकती है। यहां जिस आनन्द का खात्मा ही नहीं, वही आनन्द लेने के काबिल है और यह आनन्द दो से एक रूप हो जाने में है। सूक्ष्म दृष्टि होने पर ऐसे आनन्द की प्राप्ति होती है क्योंकि सूक्ष्म दृष्टि में अद्वैत है और स्थूल दृष्टि में द्वैत।

लुतफ अनोखा जो कुछ पावे,
लिखन कहन में मूल न आवे।
लुतफ अनोखा जो कुछ पावे,
वहदत में किसको बतलावे।
लुतफ अनोखा जो कुछ पावे,
उसमें अजब खुमारी आवे।

अनुवाद : दो से एक हो जाने में जो मज़ा है वह लिखने में या कहने में नहीं आ सकता और गैर न होने

के नाते किसी को बतलाया नहीं जा सकता। उसका नशा अजीब ही है।

व्याख्या : ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति या अपने आपको समझ लेने या अपनी आत्मा में स्थित होने या अपनी ही रोशनी में देखने से जो आनन्द या मज़ा या लुतफ आता है, वह कहने या लिखने से बाहर है यानि इन इन्द्रियों से परे का विषय है। हमारी यह इन्द्रियां एक विशेष हद तक देख सकती हैं और सर्दी गर्मी या खट्टा मीठा महसूस कर सकती हैं और इससे परे महसूस करने में शक्ति नहीं रखतीं क्योंकि वह आनन्द इन इन्द्रियों का आनन्द नहीं, इसलिए ब्यान से बाहर है क्योंकि यह ब्यान करना तो इन्द्रियों का अनुभव है और जो आनन्द मिलता है वह एकता होने के सबब किसी को कहा नहीं जा सकता क्यों कि कहने वाले के लिए सुनने वाला होना जरूरी है। जब दो हुए तो द्वैत बन गई। द्वैत होने पर आनन्द कहां? जब अद्वैत हुआ और आनन्द मिला तो द्वैत जाती रही। कौन कहे और किसे सुनाए और इस आनन्द की खुमारी या लज्ज़त ही जुदा है। शराब, भंग या अफीम के नशे में बेहोशी तारी हो जाती है, मर जाने का खतरा रहता है, इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं, बुद्धि नष्ट हो जाती है

और नशा उतरने के बाद कमज़ोरी घेर लेती है लेकिन रूहानी नशा सबसे अजीब वस्तु है। इसमें सरासर शक्ति ही भरी है और इसका आदि-अन्त भी नहीं। बाणी में कहा है,

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

हजूर महाराज बीर जी ने अपनी पुस्तक 'अज़हारे हकीकत' में इस तरह वर्णन किया है,

मेरे साकी का मयखाना, सदा आबाद रहता है।
जो इससे घूंट दो पी ले, हमेशा शाद रहता है।
मुसायब और गम दुनियां के, सारे दूर होते हैं।
कलेशो रंज सारे दूर क्या, काफूर होते हैं।

क्या क्या मौज तुझे बतलाऊं,
क्या क्या भेद तुझे समझाऊं।
कहन लगूं पर कह न साकूं,
निजानन्द को किस विध भाखूं।
अन्तर की गत अन्तर जाने,
जीभा उसको क्या बखाने।

अनुवाद : वहां के लुतफ और भेद बतलाए नहीं जा सकते। कहना चाहूं पर कह नहीं सकता। जो सरूर

मिलता है, उसे कैसे कहूं। अन्दर की हालत को अन्दर पहुंच कर ही जान सकते हैं। ज़ुबान ब्यान करने से आजिज़ है।

व्याख्या : यहां भी प्रभु मिलाप और मुक्ति के आनंद का वर्णन है। महात्मा गुरु थोड़ा साधन बतला कर फिर उसकी महिमा करने लग जाते हैं ताकि रुचि और अभिलाषा बनी रहे। पहले शब्द में गुरु कहते हैं कि वहां का आनन्द और सरूर क्या बतलाऊं यानि कि वो गिनती से बाहर है। जो कुछ बतलाया है वह भी थोड़ा है। इसी तरह वहां के असरार या भेद या छिपी हुई बातें बतलाई नहीं जा सकती हैं। कहने को तबीयत करती है क्योंकि सच्चे अधिकारियों से छिपाने को गुरु की तबीयत नहीं चाहती लेकिन कह नहीं सकता क्योंकि जीभा उसी आनन्द और सरूर को ब्यान कर सकती है जिसका उसे अनुभव और ज्ञान हो। जो इस से दूर हो, उसकी पकड़ से बाहर हो, उसका ब्यान कैसे करे यानि ब्यान कर देने की इच्छा पर भी ब्यान करने से मजबूर है। जो आनन्द और सरूर आत्मा को मिला है, उसको किस तरह से ब्यान कर दे क्योंकि आत्मा तो इन्द्रियों का विषय नहीं। इस लिए अन्त में गुरु ने कहा कि आनन्द

और सरूर की हालत को आत्मा ही जान सकती है। ज़ुबान ब्यान करने से आरी है। इस तमाम बयान में मकसद यह है कि रूहानी आनन्द और सरूर हवासों के फहम से परे है यानि ज्ञान इन्द्रियों से परे है। जो लोग इन्द्रियों के ज़रिया इसे जानना चाहते हैं वो गलती पर हैं क्योंकि आत्मा इन से सूक्ष्म और लातीफ से है। इस लिए इन्द्रियों के विषय से उपराम हो कर इनके लुत्फ और सहारे को छोड़ करके ही आत्मा की तरफ कदम बढ़ाया जा सकता है। जो इन्द्रियों का सहारा लेंगे, वह आत्मा तक नहीं पहुंच सकेंगे।

जो कोई अपवा आप गंवाए,
वो ही पी से मौज मनाए।

अनुवाद : जो प्रेम के रास्ते में अपने आप को फनाह करता है, वो ही आदमी ज़िन्दगी का अधिकारी होता है।

व्याख्या : यह दूसरा साधन है कि तालिब या प्रेमी प्रभु के इश्क में अपने आप को फनाह कर देता है यानि उसमें अपनापन कुछ नहीं रहता। जब तक अपनापन या खुदी बाकी है तब तक प्रभु मिलाप नहीं हो सकता और प्रेमी की लगन कच्ची है। प्रभु प्रेम में स्त्री का दर्जा उस वक्त नसीब होता है जब भक्त अपने आप को

बिल्कुल भुला देता है। इक जोत में सिर से पांव तक (सरापा) महव हो जाता है। इस लिए शेख इराकी खुदी के हाथों फरियाद करते हुए दुआ मांगते हैं,

अज़खुदी खुदम खलासी दे
कज़ खुदम गमहस्त मरहमनेस्त।

मुझे अपनी खुदी से खलासी दे क्योंकि अपनी खुदी से गम मिलते हैं, मरहम नहीं।

श्री बीर जी महाराज अपने आप गंवाने की हालत का सरूप अपने रसाला 'अज़हारे हकीकत' में इस तरह फरमाते हैं,

कहूं क्या हाल मैं अपना मेरी दुनियां निराली है
यह सारी जिन्दगी दिलबर पे मैंने वार डाली है
प्रीतम से लगा कर नैन मैं मसरूर रहता हूं
शराबे इश्के शाहे हुस्न से मखमूर रहता हूं
मैं दुनियां के झमेलों से बरी आज़ाद रहता हूं
मुआले इश्क से मैं हर घड़ी आबाद रहता हूं
मुताए इश्क है जागीर मेरी यार गुरबत में
मैं अपना आप खो जाता हूं उस दिलबर की चाहत में
मैं उसके प्रेम से बिल्कुल नई दुनियां बसाता हूं
मैं अपने मन के मन्दिर में ही मन मोहन को पाता हूं

मैं इसमो जिस्म से आबाद हो आज़ाद रहता हूं
किसी के इश्क के दावे से हरदम शाद रहता हू
अजब हालत हो जाती है दिगर नक्शा हो जाता है
कि साकी मय पिला कर बाद में साकी बनाता है
न मैं तू का रहे कुछ फर्क हम इक जान होते हैं
ख्याले बेखुदी में हर घड़ी गलतान होते हैं।

युक्त कहूं खुद आनन्द पाओ,
प्रेमी बन के प्रीत कमाओ।

अनुवाद : मैं यह बिल्कुल ठीक कहता हूं कि खुद मसरूर (आनन्दित) हो और प्रेमी बनकर सबसे मुहब्बत करो।

व्याख्या : प्रेमी बन कर सबसे मुहब्बत करना यह तीसरा साधन है और इसमें अपनी साक्षी से प्रेमी बन कर सबसे मुहब्बत करने से खुद को आनन्द और खुशी हासिल होती है। श्री महाराज बीर खुद प्रेम स्वरूप हैं और प्रेम के फैलाव के लिए "प्रेम समाज" की स्थापना की है। प्रेम के फैलाव के लिए आप फरमाते हैं,

बोरा प्रेमी होए के दिल में धार विराग
जेकर लाह खटना बदियों से तू भाग

बीरा प्रेमी होए के हर से प्रेम बढ़ा
मन अपने को साफ कर विषय विकार मिटा
प्रेम पतंगा होए के बीरा प्रेम कमा
प्यारे को जे पावना अपना आप जला
सगल कदूरत दूर हो देखे खूब प्यार
डंका बाजे प्रेम का बीरा विश्व मंझार।

प्रेम की महिमा में आपका वचन है,

प्रेम बड़ा अनमोल है, बूढ़ा बालक जोए
प्रेम कमा के देख ले, प्रभु को पावे सोए।

दीद बिना कुछ और न चाहो
झगड़े झांजे सब बिसराओ।

अनुवाद : प्रभु के दर्शन बिना कोई इच्छा न रखो। दुनियां के झगड़ों से बिलकुल किनारा करो।

व्याख्या : जैसे चतुर वैद्य गुणकारी दवा देता हुआ उसके लाभ और प्रयोग के साथ परहेज़ भी बतलाता जाता है बल्कि लाभ से ज्यादा परहेज़ की ओर ज्यादा तवज्जा दिलाता है, इसी तरह सच्चा गुरु भी रूहानी शिक्षा के साथ-साथ इस मायावी परपंचों से बचे रहने की बार-बार ताकीद करता है क्योंकि यह बड़े प्रबल हैं।

हज़ारों साल तपस्या में लगे रहने पर भी ऋषि मुनियों को भी गिरा देते हैं। इसलिए इस शब्द में शिष्य को जहां अपने आला मकसद पर कायम रहने की ताकीद की गई है वहां इस संसार की मन भूमि को झगड़ों से भी बचे रहने की सख्त ताकीद की गई है।

मन की भूमि साफ बनाओ,
विषय वासना सब बिसराओ।

अनुवाद : मन को पवित्र करो और विषय वासना को त्याग दो।

व्याख्या : यह चौथा साधन है, मन को पवित्र रखना और विषय वासना को छोड़ देना। यहां मन को जमीन से तशबीह दी गई है जिससे आला जमीन को सम्भाल न करने पर मालिक को आला फसल न होने की वजह से नुकसान पहुंचता है और उसकी सम्भाल होने पर बहुत कीमती फसल होकर मालिक को बेशुमार मुनाफा पहुंचता है। इसी तरह मन की हालत है। जो इसको साफ कर इसमें आला विचारों का बीज बोता है, वह वक्त आने पर मोक्ष रूपी फसल पाता है। मन को पवित्र करने के लिए लज्ज़तों और उसकी कामनाओं का त्यागना बहुत जरूरी है। विषय वासना के त्याग के लिए 'महाराज बीर"

फ़रमाते हैं,

जेकर मारा शेर को, कछु न मारा यार
डण्डा ले सन्तोष का, मन मूज़ी को मार
मन मारे से आदमी बन जाए प्रभु का रूप
चाह मिटे से बीर यह बन जाए असली भूप।
हर कोई चाहे उसको जिसको कुछ नहीं चाह
बीरा रमता राम में होकर बेपरवाह
उसके इक इक शब्द में प्रभु की समझो आवाज़
प्रभु समझे या बीर वह समझे अपना राज़।

प्रीतम के दर की धर टेक,
ध्यान धरो बस उसका एक।

अनुवाद : प्रभु का ही सहारा लो और उसी का ध्यान धरो।

व्याख्या : यह चौथे साधन का अभ्यासी पहलू है विषय वासना का त्याग और मन की पवित्रता प्रभु के आश्रित होने, उसमें चित लगाने, ध्यान जमाने से ही प्राप्त होती है। जीव को जब तक ज्ञान प्राप्त नहीं होता, वह किसी सहारे को ढूंढता है और किसी पर आश्रित होकर रहना चाहता है। क्योंकि यह साधन अवस्था है इसलिए गुरु फरमाते हैं कि दुनियां के सब सहारे छोड़ कर भगवान का आसरा लो। प्रभु के

आश्रित हम हुए हैं या नहीं, इसकी जांच के लिए इमतिहान के वक्त आएंगे। दुखों और मुसीबतों के पहाड़ों से टकराना होगा। जो कामयाब होंगे वह ही प्रभु के प्यार के हकदार कहलाएंगे। 'बीर जी' फरमाते हैं,

तू जप नाम हक का, सहारा वो हीं है,
यह दुख में हमारा तुम्हारा वही है।

ध्यान धरने की ताकीद इसलिए है कि जिस वस्तु का यह ध्यान करता है वैसा ही यह अपना रूप बना लेता है। जैसे भृंगी का ध्यान करने से कीट भृंगी ही हो जाता है। इसी तरह जड़ वस्तु का रूप ध्यान करने से मन भी जड़ हो जाता है और चेतन का ध्यान करने से चेतन रूप हो जाता है। दुख का ध्यान करने से दुखी, सुख का ध्यान करने से सुखी हो जाता है इसलिए गुरु ने कहा कि प्रभु का ध्यान करो।

ध्यान कैसे करें

ध्यान कैसे किया जाए इसका वर्णन अगले शब्दों में किया जाता है।

ध्यान करने के लिए तैयारी

बाहर के पट बन्द कराओ,
अन्दर के पट खोल दिखाओ।
बाहर की कोई बात न जावे,
अंतर की सब सुनने पावे।

अनुवाद : बाहर से ध्यान हटा कर अंदर की तरफ रुख करो। बाहर के अनुभव बाहर ही रहें। अंदर से जो आवाज़ आ रही है, उसे सुनो।

व्याख्या : आत्मा का बाहर की दुनियां से सम्बन्ध इंद्रियों के ज़रिए है। जब इंद्रियां अपने विषयों में लुप्त होती हैं तब मनुष्य को बाहर मुखिया या बाहर की तरफ मोड़ा जाता है। दुनियां में जिन लोगों को अधिक भीड़-भाड़, शौर-गुल, जलसे-जलूस, तमाशे-महफिलें, रगड़े-झगड़े, वाद-विवाद, फज़ूल गप्प शप्प, टीप-टाप, मार लो-पकड़ लो, यह ले लिया है वो भी ले लो के नारे और काम पसन्द हैं, वह बाहर मुखिया हैं और जो इस तरफ ध्यान नहीं देते हैं, शांत हैं, गम्भीर हैं, श्रद्धावान हैं, प्रेमी हैं, इन्द्रियों को वश में किए हुए हैं, धीरजवान हैं, सबर और सन्तोष के पाबन्द हैं, उनको अन्तर मुखिया या

अंदर की तरफ झांकने वाला कहा जाता है। मनुष्य के बाहर मुख होने से भांत-भांत के लड़ाई झगड़े, फसाद, दंगे खड़े होते हैं, पार्टियां बनती हैं, नुक्ताचीनियां होती हैं। एक दूसरे की तबाही, गारतगरी और बर्बादी के मनसूबे बांधे जाते हैं। एक विशाल शोरोशर पैदा होता है जिससे दुनियां में शांति और अमन की जगह अशांति और बदअमनी फैलती है। इससे ज़ाहिर है कि बाहर की तरफ ध्यान देना साधक के लिए कितना खतरनाक और नुकसान देने वाला है। जो साधक अमली तौर पर रूहानियत की ओर कदम बढ़ाना चाहता है, उसे सबसे पहले इन्द्रियों पर काबू पाना होगा यानि वश में करना होगा। जैसे सारथी के वश में घोड़ा होता है वह घोड़े को अपनी मर्ज़ी से जिस तरफ ले जाना चाहता है, ले जाता है। इसी तरह इन्द्रियों को वश में करना होगा। कछुआ जब अपने अंगों को सुकेड़ना चाहता है, अन्दर की जानब सुकेड़ लेता है। इसी तरह जब इन्द्रियां वश में आ जाएंगी तब मनुष्य अंतरमुख हो जाएगा और रूहानियत की तालीम का अधिकारी ठहरेगा। गुरु कहते हैं कि जब ध्यान करना हो, उस वक्त इन्द्रियों को अपने विषय की तरफ जाने से रोक दो। जब इन्द्रियां रुक गईं तो समझो बाहर के पट बन्द हो गए। अब अंदर की तरफ ध्यान

दो और बड़ी शांति और एकाग्रता से कुदरत की बातों को सुनो। इन बातों को सुनना कुदरत से बात करना होता है। यहां सब दुनियां के भेद खुल जाते हैं और इसे ही कशफ की हालत कहते हैं। यहां की बातें वहम भ्रम से ऊपर की होती हैं और सोलह आने सच्च होती हैं। महात्मा लोगों की वाणी यकीन करने वाली होती है। वो इसी अवस्था में होकर ब्यान की जाती है। इस हालत का वर्णन श्री 'महाराज बीर' ने 'ज्ञान अमृत' में इस तरह किया है,

ध्यान जमाया वीर जब, हुआ सब प्रकाश
कमल कुंड से आ रही, भंवर गुफा में वास
बीर पवित्र वास ने, कौतक दिया दिखाए
जो जो आया पास फिर, उसको दिया महकाए।

इसी हालत में कुदरत से बात करते हुए बीर कहते हैं,

धुर से बात लिआए के, जग में दूं पैगाम
न समझे या समझ ले, यह दुनियां का काम।

साधक की रुचि इस तरफ करवाने के लिए बीर कहते हैं,

बीरा इतना महव हो कि अंदर झाती मार,
महवीयत में शब्द की तुझ को सुने टंकार।

बीर अपने मूंद ले आंख नाक और कान,
सुन्न समाधि लाए के अपना आप पहचान ।

ख्याल जमावे यह मन मांहि,
पी बिन मेरा कोई नांहि ।

अनुवाद : तब मन में यह ध्यान करे कि प्रभु के बिना मेरा कोई नहीं है ।

व्याख्या : साधक जब अंतरमुख हो जावे, तब ध्यान बांधने का अभ्यास करे क्योंकि जब तक अंतरमुख नहीं होता, वृति चंचल रहेगी । जब तक मन में चंचलता है तब तक एकाग्रता नहीं हो सकती । आज कल लोग अंतरमुख हुए बिना ही ध्यान जमाते हैं । चंचलता के कारण जब मन नहीं लगता तो साधन और गुरु में नुक्स निकालने लगते हैं । अपना दोष नहीं जानते । ध्यान का यह फायदा है कि एकाग्र सुर्त के साथ जिस वस्तु का ध्यान किया जाता है उसके गुण रूप वैसे ही शरीर में प्रकट होने लगते हैं । भृंगी कीट को पकड़ कर जब अपने जाल में ले आता है तब वह डर के मारे हर दम भृंगी का ध्यान करता रहता है । अंत में वह लगातार ध्यान से खुद भृंगी हो जाता है । एक शिष्य गुरु के पास ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए हाज़र हुआ । गुरु ने साधने के तौर

पर एक कुटिया में बिठा दिया और कहा कि बेटा, भैंसों हम, भैंसों हम (मैं भैंस हूं, मैं भैंस हूं) का जाप एकाग्रता के साथ करते रहो। शिष्य ने गुरु के वचन का पालन किया और निहायत एकाग्रता के साथ भैंस का ध्यान करके जाप शुरू कर दिया। कुछ समय के बाद गुरु ने पुकारा, "बेटा।" अन्दर से अवाज़ आई, "बां बां"। गुरु ने समझ लिया कि ध्यान पक्का हो गया। कुछ देर समझाया और कहा, बेटा बाहर आओ। शिष्य कुछ जागृति में आया और बोला, महाराज, दरवाज़ा छोटा है, मेरा शरीर (भैंस का शरीर) इसमें से निकल नहीं सकता। तब गुरु ने जाना कि इसके रोम रोम में यह ख्याल जम गया है कि मैं भैंस हूं। तब उपदेश दिया कि पुत्र अब एक जोत का जाप करो। जब ध्यान पक्का हुआ तो उसके रोम-रोम में जोत समा गई। तब गुरुदेव ने कहा, अब बाहर आओ। शिष्य बाहर आ गया और गुरु के सत्य उपदेश से कृत कृत हो गया। ऐसे ही ध्यान का यहां वर्णन है। जब तक ऐसा पक्का विश्वास नहीं होगा, तब तक ध्यान अपूर्ण है।

दुनियां के सब नाते छोड़े,
एक पिया से नाता जोड़े।

अनुवाद : दुनियां के सब बन्धनों से किनारा करके एक भगवान से ही नाता जोड़े ।

व्याख्या : यह उपरोक्त शब्द का अभ्यासी पहलू है कि जहां यह प्रण किया जाए कि भगवान के बिना मेरा कोई नहीं, वहां अभ्यास में भी यह आए कि संसार की किसी वस्तु से भी सम्बन्ध, आसक्ति, लगाव या मुहब्बत न रहे क्योंकि हज़रत मसीह के फरमान के अनुसार, "कोई आदमी दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता ।" क्योंकि या तो एक से घृणा करेगा और दूसरे से मुहब्बत या एक से मिला रहेगा और दूसरे को नाचीज़ जानेगा । श्री बीर जी फरमाते हैं,

बीर सब कुछ राम है, राम बिना कुछ नाहिं ।
उठते बैठे हर घड़ी, राम सिमर मन माहिं ।
राम नाम को बीर तू, छिन भर भी न भूल ।
राम नाम बिन जिन्दगी, निरी समझ तू धूल ।
राम नाम की प्रीत में, तू अपना आप गंवा ।
बीरा दुनियां छोड़ के, प्रीतम राम बना ।
राम नाम को तू सिमर, विषयों से तू भाग ।
बीरा आग लगाएं यह, तू इनको ला आग ।

बीरा होमा त्याग के, तू बन जा खुद्दार।
रख प्रभु पे आसरा, कभी न हिम्मत हार।

त्रिकुटी एक निशान बनावे,
इस पर ही सब ध्यान जमावे।
गुरु का शब्द सहारा देवे,
मन ही मन में मदद ले लेवे।

अनुवाद : त्रिकुटी को निशाना बना कर वहां ध्यान जमावे। मुश्किल आने पर गुरु का शब्द सहायक होगा, उसका जाप करे।

व्याख्या : दोनों भवों के बीच नाक के ऊपर की जगह का नाम त्रिकुटी है। उसे शिव नेत्र भी कहते हैं। इस पर ध्यान जमाने से पूर्ण एकाग्रता हासिल होती है और शब्द साधना से भिन्न भिन्न नज़ारों का ज्ञान होता है और भगवान की माया, अनगिनत अनमोल हीरे और जवाहरात हाथ लगते हैं लेकिन यह सब कुछ गुरु कृपा और उनके शब्द से होता है। इस लिए किसी पूर्ण गुरु की शरण में जाकर उनका शब्द लें। जैसे जो पौदा एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह लगाया जाता है वह पौदा बहुत ही उमदा और फल वाला होता है क्योंकि उस में कुदरत का हाथ होता है और जो पौदा

खुद-ब-खुद उगता है वह उमदा नहीं होता, न बहुत फल लाता है। इस तरह जो गुरु शब्द देता है उसमें गुरु की अपनी तपस्या और मकनातीसी का असर भरा होता है जिससे वही असर और शक्ति शिष्य में पैदा हो जाती है। किताबों से पढ़ कर अभ्यास करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि वह केवल भक्ति है। अभी उसके भेद छिपे हुए हैं। जब तक भेद ज़ाहिर न हों तब तक शब्द का कोई असर नहीं होता।

ऐसा उस जा ध्यान जमावे,
अंतर दृष्टि को पथरावे।

अनुवाद : उस जगह ऐसा ध्यान जमावे कि अंदर की आंख भी मंद पड़ जाए।

व्याख्या : दोनों भवों के मध्य जो जगह है वहां ऐसा ध्यान बांधे कि कुदरती जोत प्रकट हो जाए। यह जगह रोशनी का सैंटर है। जैसे दुनियां में रोशनी होने से सब चीज़ें अपनी-अपनी जगह ठीक तरह से नज़र आने लगती हैं, ऐसे ही इस जगह ध्यान जमाने से रूहानी रोशनी दिखाई देती है जिससे सभी छिपे हुए भेद खुल जाते हैं और कोई बात छिपी नहीं रहती क्योंकि इस सब हालत का सम्बन्ध अभ्यास से है। इसलिए यहां तो केवल ध्यान

की बढ़ाई ही ब्यान की जा सकती है। प्रेमी गुरु शरण में आकर अभ्यास सीख ले तो इस सच्चाई का ज्ञान अनुभव हो जावे। तसव्वर या ध्यान की बढ़ाई में एक कवि लिखता है,

तसव्वर की हकीकत जब तू जाने,
तसव्वर राहबरे मौला तू माने।
न कर इंकार इसे यार जानी,
तसव्वर मौमनी की है निशानी।
तसव्वर शेख आदी राहे खुदा है,
तसव्वर जांफज़ा रेजो बला है।
तसव्वर से तू उड़ आसमान जाए,
तसव्वर से मज़ा ईमाम पाए।
तसव्वर नफस को कुश्ता बनाए,
तसव्वर नफस मोमिन बनाए।
तसव्वर में नहीं कुछ यार मिलता,
तसव्वर बिन नहीं कोई इंसान बनता।

तसव्वर या ध्यान की बरकत से अन्दर बाहर के सभी लाभ प्राप्त होते हैं। ध्यान की जिस तरफ भी कदर की जाए, कम है। इसलिए गुरु शरण में जाकर ध्यान की विधि सीखनी चाहिए।

ऐसा नक्शा जब हो जावे,
तब सुरती आगे को धावे।

अनुवाद : जब ध्यान कायम होगा तब सुरती आगे बढ़ेगी।

व्याख्या : जब ध्यान लगेगा तब तक एक मन्जिल तय की हुई समझनी चाहिए। इसके बाद सुरती आगे की तरफ बढ़ने लगेगी। इस प्रकट होने की दशा को 'महाराज बीर' इस तरह फरमाते हैं,

जो कुछ करना वीर तू, कर सुरती के साथ
जब सुरती जम जाएगी, मतलब लागे हाथ
सुरती बिना जहान में, भटके कई गंवार
वक्त गया कुछ मिला न, आयु लई गुजार
सुरत ला के शब्द से गहरी झाती मार
भवर गुफा में वीर तू, ढूंढ अपना यार
सुरती ला के सुरत से, सुरती फेर संभाल
अपना हाल गंवाए के बीरा प्रीतम भाल।

धावत धावत उस जा धाए,
जिस जा मकसद ठीक सुहाए।

अनुवाद : ऐसा ध्यान जमाए कि ध्याता और ध्येय एक हो जाएं।

व्याख्या : ध्याता ध्यान करने वाले को कहते हैं और ध्येय जिसका ध्यान किया जाए। यह ध्यान की आखिरी हद है। ध्यान की स्थिति इसी में है कि ध्यान करने वाले को अपना या बाहर की दुनियां का कुछ ध्यान न रहे। महात्मा बीर फरमाते हैं,

रख विश्वास ध्यान अंदर,
जिहड़ा प्रेम नाल जोत जगांवदा ए।
होके मस्त मलंग बेखुदी अंदर,
इक जोत से जोत मिलांवदा ए।
इसम जिस्म नूं भुल के इक हो के,
हर जा जोत दा दर्शन ही पांवदा ए।
बीरा उसदे जाग पये भाग समझो,
प्यारा उसनूं गले लगांवदा ए।

जब यह स्थिति या हालत हो जाती है तब लक्ष्य की प्राप्ति होती है और पूर्ण ज्ञान और आनन्द हासिल होता है।

दसम द्वारा जाए खुलाए,
निजानन्द में जाए समाए।

अनुवाद : तब दसम द्वारा खुल जाता है और ब्रह्म प्राप्ति होती है।

व्याख्या : जब ध्यान पक्का हो जाता है तब दसम द्वारा खुल जाता है और जोत में जोत मिल जाती है। शरीर के नौं द्वार (दो आंखें, दो कान, दो नाक के छेद, एक मुंह, गुदा और मूत्र इंद्रियां) प्रकट हैं। मृत्यु के समय इन रास्तों से जीव निकलता है। जो अधर्मी और पापी हैं उनका जीव नीचे के छेदों से निकलता है और जो पुण्यवान हैं उनका ऊपर के सुराखों से। लेकिन दसम द्वार सिर में है। जिसे आम तौर पर कुपाल कहते हैं। छोटे बच्चों के सिर में यह जगह अच्छी तरह देखी जा सकती है क्योंकि इस आयु में बाल कम होते हैं तथा चमड़ी नर्म होती है। महात्माओं और योगी पुरुषों का जीव इस सुराख से, जो बन्द होता है, त्वचा (खाल) को तोड़ कर निकलता है। इस द्वार से जीव के निकलने पर पुनर्जन्म नहीं होता और जैसे दरिया समुन्द्र में समा जाता है ऐसे ही जीव निजानन्द में मिल जाता है।

सुरती निज घर जाए वराजे,
जहां शब्द की वीना बाजे।

अनुवाद : जीव अपने घर में पहुंच जाता है जहां

शब्द की वीना बजती है।

व्याख्या : जीव अपने अज्ञानतम स्वरूप को छोड़ कर अपने स्वच्छ स्वरूप को प्राप्त हो जाता है। इस रूप की प्राप्ति में आनन्द है। इस रूप को शास्त्रों में परमधाम, मोक्ष भी कहा गया है।

अनहद शब्द या कुदरती राग

ध्यान की दृढ़ता—जिस जगह सुरती पहुंचती है इस जगह की एक विशेषता शब्द के दूसरे पद्य में यह ब्यान की गई है कि वहां हरदम शब्द की वीना बजती है यानि कुदरती राग गाया जाता है। यह शब्द क्या है ? संक्षेप में उसके बारे में यहां लिखते हैं, बाकी सम्बन्ध अभ्यास से है। यह शब्द एक कुदरती राग है जो हर समय आकाश मंडल में होता रहता है। जो कुछ बाहर प्रकट संसार में है वही सब कुछ हमारे दिल में भी गूंज रहा है। हम एकाग्रता या ध्यान की दृढ़ता से इसको सुनना चाहें तो सुन सकते हैं। यह राग इतना सुरीला है कि इसको सुनने से जीव इतना सरूर हासिल करता है कि हमारे शरीर के शेष अंगों को अपनी सुध बुद्ध नहीं रहती। इस कुदरती राग में इन्तहा का रस है और इसके

सुनने वाले को मौत नहीं है बल्कि ज्यों-ज्यों इसको सुनता है, नई जिन्दगी तथा ताज़गी हासिल करता है। इस राग के कई दर्जे हैं। ज्यों ज्यों मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति करता जाता है इन दर्जों को प्राप्त करता जाता है और लुत्फ सरूर से आनन्द हासिल करता जाता है। सत्य तो यह है कि यह हालत ब्यान से बाहर तो है ही परन्तु प्रशंसा के शब्दों से भी आज़ाद है।

बीन सुने तब मस्ती आए,
परम प्रिया से जा लिपटाए।

अनुवाद : सुरत जब शब्द सुनती है अपनी सुध बुद्ध खोकर मसरूर हो जाती है और भगवान से लिपट जाती है।

व्याख्या : यह लिपटना केवल उदाहरण के तौर पर ब्यान हुआ है अर्थात उसमें लीन हो जाती है यानि अहंकार और खुदी का नाश हो जाता है। बीर जी फरमाते हैं,

जिसने निज घर पहुंच के कीना है विश्राम।
अनामी से मिल बीर वह, खुद हो बन जाए नाम।
एक जोत में महव हो, खुद ही बन गया जोत।
ओत पोत सब रम रिहा, मिटे जात और गौत।

वहां सच्चाई जो कुछ देखे,
निज नैनन से इसको पेखे।

अनुवाद : वहां की सच्चाई को अपनी आंखों से देखे।

व्याख्या : समाधि या पूर्ण महवीयत की स्थिति में जो सरूर या आनन्द आता है उसका संसारिक आनन्द से मुकाबला करें तो मालूम होगा कि यह उसके सामनें बिलकुल हेच और सिफर है।

पेखत पेखत बौरी होवे,
सगरी सुध बुद्ध अपनी खोवे।

अनुवाद : इस आनन्द को देखते-देखते होशो हवास गुम हो जाते हैं।

व्याख्या : जब समाधि में पहली बार अलौकिक आनन्द या रूहानी सरूर मिलता है तो सुरत देख-देख कर हैरान होती है। यह देखना और हैरान होना शब्द दुनियावी लोगों की बोलचाल के तौर पर वर्णन हुए हैं अर्थात समाधि के लुत्फ तथा आनन्द को पाकर सुरत दुनियां के सम्बन्ध को भूल जाती है।

दो का काम वहां नहीं भाई,
एक-एक में रहा समाई।

अनुवाद : वहां द्वैत या तफरीक नहीं है केवल अद्वैत (वाहदत) है।

व्याख्या : समाधि अवस्था में द्वैत नहीं रहती। जीव तथा ब्रह्म एक हो जाते हैं।

कौन सुने और कौन सुनावे,
प्रेमी प्रीतम इक हो जावे।

अनुवाद : वहां प्रेमी और प्रीतम एक हो जाते हैं। कहने सुनने का सम्बन्ध ही नहीं रहता।

व्याख्या : कहने सुनने और भेद भरी बातों के लिए दो का होना जरूरी है। जब तक दो न हों, कहना और सुनना बन ही नहीं सकता। समाधि अवस्था में जब द्वैत मिट गई तो वहां की हालत का हाल कौन कहे और किससे कहे। 'अज़हारे हकीकत' में बीर जी फरमाते हैं,

न मैं तू का है कुछ फर्क, हम इक जान होते हैं
ख्याले बेखुदी में, हर घड़ी गलतान होते हैं
कभी मैं बेखुदी में, भेद थोड़ा सा बताता हूं
मगर जब होश पाता हूं, फौरन ही छुपाता हूं।

निजानन्द को कह न साके,
प्रेम रूप को किस विध भाखे।

अनुवाद : अपने सरूर की हालत कही नहीं जा सकती और न ही प्रेम रूप का ज़िकर किसी तरह किया जा सकता है।

व्याख्या : आनन्द या सरूर की हालत की प्रशंसा तो की जा सकती है लेकिन दूसरे को इसका अनुभव जीभा और लेखनी से नहीं करवाया जा सकता। जैसे कोई गहरी नींद सो कर उठे तो यही कहेगा, खूब नींद आई थी या अच्छा खाना खाने के बाद यही कहेगा कि खाना बड़ा स्वादिष्ट था। लेकिन सोने और खाने से जिस आनन्द सरूर को पाया, उसको नहीं बतलाया जा सकता। इस तरह रूहानी आनन्द या सरूर है और वह तो है भी इन्द्रियों की पकड़ से बाहर। इसलिए उसकी प्रशंसा भी नहीं की जा सकती। अनुभव से ही जाना जा सकता है। श्री महाराज अत्यंत दया और करूणा में आकर प्रेमियों को बतलाना तो चाहते हैं लेकिन उस आनन्द के इन्द्रियों के अतीत होने के कारण ब्यान करने में मजबूर होकर फरमाते हैं,

कहूं मैं भेद क्या सारा, मैं हाय कह नहीं सकता।

'आईना-ए-हकीकत' में इस मस्ती सरूर का हाल दूसरे अंदाज़ में इस तरह किया है,

जिसे भेद अपना बताता है वो,
उसे अपने जैसा बनाता है वो।
अजब रंग उस पे चढ़ा देता है,
गुनाहों से उसको छुड़ा देता है।
खुदी और गुमां सब मिटा देता है,
मुहब्बत के कलमें पढ़ा देता है।
उसे प्रेम करना सिखा देता है,
जहां का प्रेमी बना देता है।
सभी फिक्र उसके हटा देता है,
गमों गुस्सा बिलकुल मिटा देता है।
मुहब्बत के सागर पिला देता है,
अनोखी सी मस्ती चढ़ा देता है।
मिला लेता है तब उसे नूर में,
बसे उसके दीदा-ए-मखमूर में।
मगर रोहब ऐसा जमा देता है,
कहे न किसी को बता देता है।

अजब नजारे देखो भाई,
करके देखो खूब कमाई।

अनुवाद : भाई प्रेम भक्ति करके वहां के अजीब नज़ारे देखो।

व्याख्या : यह प्रेम भक्ति की तरफ रुचि बढ़ाने वाला शब्द है। जो लोग दुनियां की ख़ुशनुमाई और चमक पर जान देते हैं और यहां विचित्र दृष्यों को देखकर ही यह इच्छा करते हैं कि हम कभी मरें ही न और न ही यह दृष्य खत्म हों। उनके लिए महाराज बीर फरमाते हैं कि ए नाशवान दुनियां के नाशवान दृष्यों को नाशवान चाहनें वालो ! प्रेम भक्ति करके इनसे वहुत ही उत्तम और दृष्यों को देखो, जो कभी समाप्त नहीं होंगे और न ही तुम उनको देखने से उकताओगे। हर घड़ी आनन्द अनुभव करोगे। इन दृष्यों की कुछ झलक वीर जी की वाणी में देखिए,

ज़ाल ज़रा कु सुरत जद जोड़दे हां,
प्रीतम सामनें आ डेरा लांवदा ए।
देख देख के ओस नूं खुश होईए,
ओह वी हसके खुश हो जांवदा ए।
पहलू विच लैके करे अजब लीला,
खूब शोखीआं पिआ दिखांवदा ए।
जलवा देख के निगाह चुंधियाई बीरा,
ओहदा अंत नाहिं कोई पांवदा ए।

रे रुखे मुनव्वर दा देख जल्वा,
मैंनूं दुनियां दे नक्श निगार भुल गए।
ओहदे रूप ने इस कदर महव कीता,
सारे मुझ नू कार व्यवहार भुल गए।
मिलया यार ते दिल नूं करार आया,
मैंनूं जग दे सारे ही यार भुल गए।
ऐसा प्यार कीता उस नाल मेरे,
मैंनूं जगत दे बीर प्यार भुल गए।

तात्पर्य यह कि वहां के दृष्यों को देखकर दुनियां की खूबसूरती हेच नज़र आने लगी।

मरन बिना किस मकसद पाया,
जिस पाया सब मान गंवाया।

अनुवाद : मरने के बिना किसी को मंतव की पूर्ति नहीं हुई और जिसने मंतव पाया, उसने पहले खुदी का नाश किया।

व्याख्या : मरने से मतलब यहां जान से हाथ धोना या आत्महत्या करना नहीं बल्कि त्याग और कुर्बानी है यानि मरने के बाद जिस प्रकार मनुष्य के अंग और हवास बावजूद अपनी असली शक्ल के कायम होने के

नाकारा हो जाते हैं, इसी प्रकार जिन्दगी में भी उनको यह हालत हो जावे या यूं समझिए कि सब हवास या इन्द्रियां बुद्धि के अधीन हो जाएं और सरकशी से बिलकुल बाज़ आएं क्योंकि दुनियां में जिस तरह शोरो-शराबा, लड़ाई-फसाद और सच्चाई की तरफ से मुंह फेरना है, वो सब हवास के बेकाबू होने के कारण है। जब तक इंद्रियां वश में नहीं होतीं तब तक मन एकाग्र नहीं होता और एकाग्रता या यकसूई के बिना समाधि की अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए इंद्रियों के विषयों का ज़ोर तोड़ना मरने से पहले मरना है। मुसलमानों में हज़रत 'सकती' एक बजुर्ग हुए हैं। आप फरमाते हैं कि अखरोट शहद खाने को चालीस वर्ष से मेरा मन चाहता है लेकिन अब तक मैंने नहीं खाया है। इस प्रकार और कितने ही उदाहरण हैं कि जिनसे यह विदित है कि जब तक विषयों पर काबू नहीं पाया जाता, तब तक प्रभु भक्ति और नाम सिमरण में सच्ची मिठास नहीं आती। खुद बीर फरमाते हैं,

हुन मरनों पहले मर गए हां,
जो करना सी ओह कर गए हां।

दुनियां की बाज़ी हर गए हां,
उकबा नूं जित दिखाया ए।

यानि मरने से पहले मर गए हैं या जितिन्द्रय हो गए हैं। दुनियां में यही करना था सो कर लिया। दुनियां के खेल (विषयों) के फैलाव की बाज़ी को हार गए हैं लेकिन उकबा (परलोक) की जीत हासिल हो गई है।

दूसरे पद्य में दर्शाया है कि जिसने असली मकसद पा लिया, उसने खुदी को नाश कर लिया क्योंकि उसको हकीकत का ज्ञान हो गया कि खुदी के पर्दे से ही प्रभु का नूर ढका हुआ था। यह पर्दा हटा कि नूर ज़ाहिर हो गया या गुरु कृपा से सत्य ज्ञान का प्रकाश हुआ कि खुदी या अहंकार का नाश हो गया। महात्मा बीर 'बांगे हकीकत' में इस सच्चाई को इस तरह ज़ाहिर करते हैं,

खुदी गर दिल तेरे से दूर होवे,
रयाकारी कहीं काफूर होवे।
रहे न बीर कुछ भी बदगुमानी,
अबादत फिर तेरी मन्जूर होवे।

यानि खुदी के दूर होने से रयाकारी काफूर हो जाती है। बदगुमानियां या शक शुभा मिट जाते हैं और भक्ति

कबूल होती है। अबादत या भक्ति का कबूल होना ही भक्त का परम लक्ष्य है। और एक जगह महाराज बीर का फरमान है,

मानुष जन्म अमोलक मिलिया,
नेक विचार विचार कुड़े।
होमां ताप गंवा के भैणें,
नामों मन नूं ठार कुड़े।
दुनियां दी वडियाई भैणें,
अग्नि दे विच ज़ार कुड़े।
बीरा मुड़ के हथ न आसी,
हीरा जन्म संवार कुड़े।

यह मरना है अच्छा भाई,
आवागमन से लेवे छुड़ाई।

अनुवाद : यह मरना अच्छा है कि जिससे मुक्ति मिलती है।

व्याख्या : इंद्रियों के विषय और संसारिक सुख से मुंह मोड़ लेना और उनके मुकाबले में अपने आपको मुर्दा जानना यानि किसी भी विषय सुख की इच्छा न करना बहुत ही उत्तम है क्योंकि इस साधन से मोक्ष की प्राप्ति होती है। जन्म मरण के फंदे कटते हैं। इसकी पुष्टि में बीर जी का वचन है,

विषय विकारों का छूटना है मुक्ति का रूप।
जिसको कुछ नहीं चाहिए वह है अगम अनूप।
सगल इंद्रियां बस हों, कर्म होवे निष्काम।
बीरा ऐसी युक्ति का, सोधा मुक्ति नाम।

जब तक अपना मूल न जाने,
पिया से नहीं रलियां माने।

अनुवाद : जब तक जीव अपनी असलियत को नहीं जानता तब तक प्रभु से प्रेम नहीं कर सकता।

व्याख्या : जब तक जीव को अपनी असलियत यानि "मैं ही जोत हूं" का ज्ञान नहीं होता तब तक वह भ्रम से नहीं निकलता। अज्ञानता के कारण संसारिक विषय सुख में फंसकर जन्म मरण के चक्र में घूमता रहता है। जब इसको कुछ ज्ञान होता है तब अपनी बाहरी सोमा कुताही, न-साज़गारी और न-वाकफियत से छुटकारा पाने की कोशिश करता है और अपनी पहली जिंदगी के शौरो गुल को ब्राह्मण्डी जिंदगी के दिल लुभाने वाले और अमर संगीत में मिला देने के लिए बेचैन हो जाता है।

कंवार कन्या ज्यों करत शिगारा,
कैसे रलयां मांने बाझ भतारा। **(कबीर)**

अनुवाद : कंवारी लड़की वैसे श्रृंगार तो कर लेती है परन्तु पति के न होने के कारण आनन्द प्राप्त नहीं कर सकती।

व्याख्या : स्त्री जब कोई श्रृंगार करती है तो उसका मतलब अपने पति देव को खुश करना होता है ताकि वह उसकी सजावट से खुश होकर उससे मुहब्बत और प्यार करे। श्री महाराज ने इस पद्य में निहायत भेद भरी बात वर्णन की है कि कंवारी लड़की श्रृंगार करके किससे मुहव्बत करेगी क्योंकि वह अभी ब्याही तो है नहीं कि वह पति के बिना किस से मुहव्बत कर सकती है। इस प्रकार जब तक सुरत अपने महबूब के दर्शन नहीं कर लेती यानि अपनी ज़ात में बेदार नहीं हो जाती व कंवारी है, उसका श्रृंगार किसी काम का नहीं।

इक इशारा है यह कीना,
गुप्त खज़ाना तुझको दीना।
इस को रख और तू भाल,
होवेगी तब बहुत निहाल।

अनुवाद : यह जो इशारे से बतालाया है, निहायत कीमती भेद है। इसको अमल में लाने से निहाल हो

जाएगी ।

व्याख्या : यह आत्म ज्ञान की महिमा है । आत्म-ज्ञान बोलने और लिखने की कैद से आज़ाद है । इस लिए इसको इशारे से ही कुछ बतलाया जाता है क्योंकि कहने सुनने में नहीं आता, अनुभव का विषय है । गुरु शिष्य को अनुभव कराता है तभी सच्चा आत्म ज्ञान होता है । इस लिए महात्मा गुरु कहते हैं कि शिष्य, तुझे गुप्त खज़ाना (आत्म ज्ञान) का अनुभव दे दिया है । अब खोना नहीं, सम्भाल कर रखना । इससे तू निहाल होगा यानि मुक्ति प्राप्त करेगा ।

गुरु कृपा बिन कछु न होवे,
आत्म वाणी यही बगोवे ।
गुरु चरणों में जो कोई जाने,
सहज मुक्त वह बिलकुल पावे ।

अनुवाद : गुरु की कृपा के बिना कुछ नहीं । सभी महापुरुष यही कहते हैं जो अपने आप को गुरु के चरणों में डाल दे, वह आसानी से मुक्ति हासिल कर लेता है ।

व्याख्या : जैसे दुनियां का कोई काम किसी अनुभवी गुरु और तजुर्बाकार उस्ताद के बिना नहीं सीखा जा

सकता, इसी प्रकार आत्म-ज्ञान भी गुरु की कृपा के बिना नहीं मिल सकता। अगर ज्ञान का फल, जो जीवन मुक्ति है, उसके लक्षण और साधन ग्रन्थों में बहुत दिए हैं मगर उस समय तक जब तक कि कोई जीवित हस्ती जीवन मुक्ति के आनन्द में नज़र न आए, निश्चय आडोल नहीं हो सकता। बिजली की ताक्त के कई कारंट पड़ने से बिजली की समझ नहीं आती जब तक कि जोत से जगता हुआ रोशन लैम्प नज़र न आए। इस प्रकार जिंदा ब्रह्मज्ञानी जिस तरह अपने व्यक्तित्व को रोशन करता है, वैसे ही वह अपने इर्द गिर्द के व्यक्तियों को प्रकाशमन्द कर देता है। वह जागती जोत और रूहानी दीपक है जिससे सम्बन्ध जोड़ कर दूसरे भी रोशन हो जाते हैं।

स्वामी विवेकानन्द को पुस्तकें रोशन नहीं कर सकीं। उनकी आत्मा में पुस्तकें पढ़ने से नूर पैदा नहीं हुआ लेकिन राम कृष्ण परमहंस की चन्द मिन्टों की संगत से उनकी आत्मा सच्चे आत्मज्ञान से जगमगा उठी।

गुरु दत्यमय की आत्मा फिलासफी और खोज से ईश्वर की हस्ती तो कायल नहीं हुई लेकिन स्वामी दयानन्द के दर्शन मात्र से यह गिरह खुल गई और वह छिन्न भर में गुरु भक्त हो गए। जिस प्रकार दीपक से दीपक

जल उठता है, दीवाने जानवर के सूंघने से दूसरे जानवर बावरे होकर उछल पड़ते हैं, इसी तरह सच्चे अनुभवी गुरु की फूंक से जिज्ञासु के हृदय में फलीता लगाने से ब्रह्म अग्नि जल उठती है और ब्रह्म के सिवाय सब कुछ भस्म कर डालती है। महात्मा कबीर फरमाते हैं,

पारस के संग तांबा बिगरेयो,
सो तांबा कंचन होए निबरेयो,
संतां संग कबीर बिगरेयो,
सो कबीरा राम होए निबरेयो।

यानि तांबा पारस के साथ भेंट करने से सोना बन गया और संतों का संग करने से कबीर ईश्वर रूप हो गया।

महात्मा बीर 'गुरु महिमा' के विषय में लिखते हैं,
असल विच अज्ञानता का है सारा काम।
बीरा सत्गुरु मिले जब आवे समझ तमाम।
सत्गुरु की क्या बात है सत्गुरु दीनदयाल।
बीरा जातक जानकर छिन्न में करें निहाल।
सत्गुरु बिना मुहाल है नुक्ता आवे हाथ।
बीरा रस्ता खुद मिले सत्गुरु हो जब साथ।

वाचक ज्ञानी ग्रंथ पढ़ दवे दलील करोड़।
सत्गुरु बीरा पलक में प्रभ से देवें जोड़।
सत्गुरु बिना प्रभु का मिलना बीर मुहाल।
वाचक ज्ञानी और भी गुथी देवे डाल।
वाचक ज्ञानी राम को इधर उधर बतलाए।
सन्त सत्गुरु राम को घट में बीर दिखलाए।

संत वचन में आप लिखते हैं,

जे गुरु होवे उजला, उज्जवल देवे बना।
गुरु चेले में बीर तब, फर्क न दिसे का।
गुरु है रूप खुदा दा, जे गुरु होवे मीत।
आध व्याध मिटाए के, कर दे हृदय सीत।
बीरा निर्मल होए के, गुरु चरणों में लाग।
बक्षिश उन से पाए के, विषय विकार त्याग।

सच्चे गुरु की पहचान

गुरु महिमा का शास्त्रों और दूसरे धर्म ग्रंथों में बहुत विस्तार से वर्णन हुआ है। श्रद्धालु भक्त शास्त्र आज्ञा अनुसार गुरु की महिमा के तो दिल से कायल हैं लेकिन अज्ञानता के कारण गुरु की पहचान से वंचित हैं। जिसके कारण झूठे और ठगने वाले गुरु बहुत पैदा हो गए हैं।

उनकी गंदी और बुरी हरकतों से तंग आकर सोसाइटी में गुरु प्रणाली की निन्दा होने लगी है। अभिलाषी को गुरु की हस्ती से इन्कार करने की जगह उसकी पहचान करनी चाहिए। सच्चे गुरु की पहचान के कुछ लक्षण नीचे लिखे जाते हैं उनको ध्यान में रखना चाहिए।

1. जिनके पास जाने से आत्मा में सच्ची शांति और सन्तुष्टि प्राप्त हो।
2. जिस रूहानी उद्देश्य के लिए गुरु चरणों में जाए वह गर्ज़ पूरी हो जाए।
3. जिनका हृदय शुद्ध और चित्त कोमल हो।
4. जिनके पास रहने से प्रभु में चित्त लगे।
5. जिनके पास रहने से चिन्ता और फिक्र मिट जाए।
6. जो जीवों से निष्काम मुहब्बत करते हैं।
7. अपना काम मनुष्य के भरोसे पर नहीं बल्कि प्रभु आश्रित होकर करते हैं।
8. बुद्धि ज्ञान के स्थान पर अनुभव ज्ञान सुनाते हैं।
9. मन और इन्द्रियों को सदैव वश में रखतें हैं।

10. अपने विरोधियों से भी विरोध नहीं करते।

11. शब्द में मस्त रहते हैं और शब्द अभ्यास का उपदेश करते हैं।

12. उनके पास रूहानियत के बारे हर प्रश्न का उत्तर तैयार है और जैसा वह उत्तर देते हैं वैसा और कोई नहीं दे सकता।

सच्चे गुरु की प्राप्ति से ज़िन्दगी का दृष्टिकोण ही बदल जाता है। दुनियां की लाभ हानि की परवाह नहीं रहती। डर भय मिट जाता है। लोभ और बन्धन टूट जाते हैं। एक बड़ा सहारा मिल जाता है जिसके कारण कोई कमज़ोरी या कमी जीवन में नहीं आती और ज़िन्दगी में ही जीवन मुक्ति मिल जाती है।

शिष्य का धर्म

गुरु और शिष्य के सम्बन्ध में हमारा विचार एक अलग ट्रैक्ट लिखने का है परन्तु यहां गुरु के बारे में लिखा गया है। शिष्य के बारे में लिखना भी कुछ अनुचित नहीं क्योंकि खुद शब्द में शिष्य के धर्म का वर्णन हुआ है अर्थात (गुरु चरणों में जो जावे) यह गुरु चरणों में जाना

कैसे बन सकता है। यही शिष्य का धर्म है। इस का वर्णन इस तरह है कि जब ऊपर लिखे लक्षणों वाला गुरु मिल जावे तो शिष्य अपने आप को उसके अर्पण कर देवे। उसका खूब आदर सत्कार करे। शब्द का तरीका जो गुरु बतलावे उसी ढंग से शब्द का साधन करे और दिल में विश्वास रखे कि मुझको जितना लाभ मन के पवित्र होने का उनसे हो सकता है, इतना इस समय और किसी मनुष्य से नहीं हो सकता। साधन के समय में किसी पुस्तक में अंकित कोई और साधन या किसी और महात्मा की कोई बात देखकर अपनी बुद्धि से कुछ न करे और जो कोई नई बात भली या बुरी दिल में आए या किसी बात का संकल्प पैदा हो तो गुरु से पूछ ले। अगर गुरु के किसी कार्य से मन में अश्रद्धा हो तो ज़बत करे और यूं समझे कि पहले तो मेरी समझ का कसूर है। दूसरे यह भी मनुष्य हैं, गलती हो गई होगी। इस कारण मामूली फर्क और अपने विश्वास और भक्ति को नष्ट न करे। शब्द साधना के दिनों में गुरु कृपा से दिल में कोई अमस्था पैदा हो या अच्छे स्वप्न नज़र आएं या जागृत अवस्था में कोई आवाज़ सुनाई दे या रोशनी मालूम दे तो इस हालत का गुरु के सिवाय किसी और से ज़िक्र न करें क्योंकि

ज़ाहिर करने से यह अवस्था हट जाती है। अगर न हो तो, न तो साधन छोड़े और न गुरु पर से श्रद्धा हटाए बल्कि यूं विचारे कि सब से बड़ा आनन्द और फल यही है कि प्रभु भक्ति का अवसर प्राप्त हुआ है और न ही इस प्रकार की इच्छा से शब्द साधना करे कि मुझको भविष्य की बातें मालूम हो जाया करें या जो मैं कहूं वही हो जावे।

इनके अतिरिक्त अपने गुरु का दूसरे महात्माओं से मुकाबला न करे और न उनके शिष्यों के साथ बहस या तकरार करे कि कौन सी शब्द साधना उत्तम है। इस प्रकार गुरु चरणों में जाने से शब्द साधना सिद्ध हो जाती है।

दुनियां के सब भरम तजावे,
एक साच से प्रीति लावे।

अनुवाद : दुनियां की फरेब कारियों से बच कर सच से मुहब्बत करे।

व्याख्या : दुनियां एक विशाल फरेबगाह है। अज्ञानी मनुष्य अपनी अज्ञानता के कारण इस फरेब को समझने में असमर्थ हैं बल्कि इस को सच्च समझ कर उलझ गए

हैं। शास्त्रों में इसे माया जाल कहा गया है। माया के अर्थ हैं कि न होने पर असल सी जान पड़े। हज़रत मुहम्मद साहिब का वचन है कि दुनियां हारूत और मारूत से ज्यादा जादूगर है। इस से बचो। दुनियां का फरेब, जादू या भ्रम क्या है, सो सुनिये।

दुनियां का पहला भ्रम या जादू यह है कि अपने तक मनुष्य को ऐसा दिखाती है कि इस के साथ ठहरी हुई है हालांकि ऐसा नहीं है। बल्कि इसका उदाहरण साया का सा है कि साया को जब देखिए तो ठहरा नज़र आता है लेकिन हमेशा चलता जाता है।

दुनियां का दूसरा भ्रम यह है कि अपने आप को मनुष्य का दोस्त दिखाती है और ज़ाहिर करती है कि हमेशा वफा करेगी और किसी पास न जाएगी लेकिन जल्दी उस आदमी को छोड़ कर उसके दुश्मन के पास चली जाती है। उदाहरणतया चाहे दूनियां आवारा और फसादी रहती है जो मर्दों को लुभाती है, अपना प्यारा बना कर घर ले जाती है और फिर मौत का मज़ा चखती है। हज़रत ईसा ने मुकाशफा में दुनियां को बूढ़ी औरते के रूप में देखा। पूछा, तूने कितने खाविंद किए। बूढ़ी ने कहा इतने कि गिनती में नहीं आ सकते। हज़रत ईसा ने

पूछा कि वह मर गए या तलाक दे दिया। जवाब में बुढ़िया ने कहा—नहीं, मैंने सब को मार डाला। इस पर हज़रत ईसा ने फरयाया कि इन दूसरे अज्ञानी मनुष्यों पर हैरानी है कि देखते हैं कि औरों के साथ तूने क्या किया और फिर तेरी चाहत में मरे जाते हैं।

दुनियां का तीसरा भ्रम यह है कि ज़ाहिरा तौर पर यह बहुत खूबसूरत सजी हुई और सुन्दर मालूम पड़ती है और इस में जो दुख, तकलीफें और कष्ट हैं उनको छिपाए हुए है यानि जिस तरह कोई बदसूरत बुढ़िया बढ़िया पोशाक पहन ले और सोने के ज़ेवरों से अपने आप को सजा ले। जो कोई दूर से देखे तो मोहित हो जावे परन्तु जब उसके मुख से कपड़ा उतार कर देखे तो ज़लील और शर्मिन्दा हो कर उसकी सूरत से बेज़ार हो जावे।

दुनियां का चौथा भ्रम यह है कि इसके विषय भोगों में अपूर्व आनन्द आता है लेकिन अन्त में ज़िल्लत और मुसीबत उठानी पड़ती है।

दुनियां का पांचवां भ्रम यह है कि इसका प्रत्येक कार्य जो मनुष्य को पेश आता है, बहुत काम थोड़ा दिखाई देता है और जब इस काम का आरम्भ होता है तो इस

काम से और सैकड़ों काम पैदा हो जाते हैं। फिर सारी आयु उनकी पूर्ति में गुज़र जाती है और काम अधूरा ही रह जाता है।

दुनियां के यह पांच भ्रम हैं इनसे साधक को बचना चाहिए। इन्हीं का विचार करके महाराज बीर ने फरमाया है,

मिथ्या जग की दोस्ती मिथ्या जग का प्यार।
मिथ्या कार व्यवहार है देखा बीर विचार।

अब इस धोखे और फरेब से बचने का उपाय जानना चाहिए। सो एक तो यह है कि मृत्यु का हर समय चिन्तन करें और हर समय यही विचार करें कि यह सब सामान एक दिन छोड़ना है फिर इस से जी लगाने से क्या लाभ क्योंकि जिस तरह जी लगेगा, उसी कदर छोड़ते समय दुख ज्यादा होगा।

यह जग एक सराए है राजा टिके न लाट,
कोटन सौदा कर गए इस दुनियां की हाट।
जो आए तिस वंजना अपनी अपनी बार,
बीर प्रभ को याद कर मरना नहीं विसार।

दूसरे यह कि संसारिक पुरुषों और संसारिक पदार्थों

से ज्यादा सम्बन्ध न रखे यानि बहुत पुरुषों से मेल जोल और लेन देन न बढ़ाए। जरूरत से ज्यादा सामान, चीज़ वस्तु, मकान, जायदाद जमा न करे। कारोबार, रोज़गार, तजारत हद से ज्यादा न फैलाए। इन चीज़ों को अपनी आवश्यकता और आराम तक ही सीमित रखे।

बीरा हर का नाम जप, मान बड़ाई जाल,
ए नर पता न किस समय आन दबावे काल।

तीसरे सादा भोजन खाने और सादा वस्त्र पहनने की आदत बनावे। इस से इन्द्रियों का दमन होता है।

रूखी रोटी खाय के शुक्र गुजारीं बीर,
हलवे सम है भासती जे हो मन में धीर।

चौथे गरीबों में ज्यादा बैठे और अमीरों से बहुत कम मिले क्योंकि अमीरों से ज्यादा मेल जोल बढ़ाने से उन जैसा बनने और ज़रूरत से ज्यादा हर वस्तु हासिल करने की हवस पैदा होती है और गरीबों में बैठने से सादगी और प्रेम बढ़ता है। 'बीर' फरमाते हैं,

जिसने कभी गरीब से कीना नाहिं हेत,
बीर तिसको सत्गुरु कभी न देवे भेत।

पांचवें जिन महात्माओं और श्रेष्ठ पुरुषों ने दुनियां

का त्याग किया है या मध्य मार्ग अपनाया है उनके जीवन चरित्र पढ़ा करें।

छटे जिस वस्तु में ज्यादा मन लगे उसका दान कर दो। इन साधनों से संसार का माया बन्धन टूट जाएगा और सत्य ज्ञान का प्रकाश होगा।

दूसरा "इक साच से प्रीति लावे", सत्य शब्द का पंजाबी अर्थ साच है जिसका अर्थ 'होने' के है यानि जो "है" उससे मुहब्बत करें। संसार और उसके पदार्थ नाश-वान हैं। इसलिए यह सत्य नहीं है इसलिए इनसे प्रीति नहीं करनी चाहिए। प्रीति उससे करनी चाहिए जो साथ दे। जो साथ छोड़ दे, धोखा दे उससे प्रेम करने में लाभ नहीं हो सकता। सत्य वस्तु क्या है—एक मात्र भगवान। इसलिए भगवान से प्रीति करनी चाहिए।

जेकर बीरा तुझको प्रेम करन की लोड़,
दुनियां से तोड़कर प्रेम प्रभु से जोड़।
बीरा इश्क खुदाए का दूसरे इश्क फज़ूल,
दूजे इश्क लगाए के कुछ नहीं बोर मसूल।

साच बिना कुछ चाहे नाहिं,
सगल सुख पावे सच माहिं।

अनुवाद: सत्य के बिना और किसी वस्तु की

ख्वाहिश न करे क्योंकि सभी आराम और सुख सत्य के अन्दर हैं।

व्याख्या : सत्य यानि भगवान के बिना और किसी वस्तु की तमन्ना न करे क्योंकि और वस्तुओं की ख्वाहिश और प्राप्ति से शांति नहीं मिलती बल्कि ख्वाहिश बनी रहती है कि अभी तो कमी है, और ज्यादा मिलनी चाहिए। इसके उल्ट भगवान सब के सर्वाधार हैं। उनके पा लेने से सब वस्तुएं और सब सुख अपने आप ही प्राप्त होते हैं।

दूसरे अर्थों में सत्य व्यवहार और सत्य कर्म करना कहा जा सकता है कि संसार में से सत्य व्यवहार और सत्य कर्म से ही सुख और शांति प्राप्त होती है। बाल्मीकी रामायण में लिखा है,

सत्य में पूर्ण जगत प्रतिष्ठत है। ऋषियों और देवताओं ने सत्य का ही आदर किया है। इस लोक में सत्य भाषण करने वाला मनुष्य सर्वोत्तम अक्षय लोक परम धाम को प्राप्त होता है। झूठ बोलने वाले मनुष्य से सभी लोग वैसे ही डरते हैं, जैसे सांप से। संसार में सत्य ही धर्म की पराकाष्ठा है वही सबका मूल कहा गया है। जगत में

सत्य ही ईश्वर है। सत्य ही के आधार पर धर्म स्थिर है। सत्य ही सब की जड़ है। सत्य से बढ़ कर कोई उत्तम गति नहीं। दान, यज्ञ, होम, तप और वेद इन सब का आश्रय सत्य ही है।

इस से ज़ाहिर है कि सत्य की महिमा किस तरह महान है फिर सत्य के अतिरिक्त और किस वस्तु की इच्छा की जाए—किसी की भी नहीं।

रब्ब नाम और प्रेम सच्चाई,
चारों एक वस्तु हैं भाई।

अनुवाद : रब्ब, नाम, प्रेम और सच्चाई यह चारों एक ही भगवान के नाम हैं।

व्याख्या : रब्ब या ईश्वर धार्मिक पुरुषों का लक्षण है, नाम संत महात्माओं का और प्रेम सच्चाई फिलास्फरों का लक्षण है। अपने अपने दृष्टिकोण से हर एक अपने लक्ष्य को सही समझता है। वास्तव में चारों का निशाना एक ही है, सिर्फ शब्द भेद है। इस शब्द भेद के कारण तफरीक बनी हुई है। बीर फरमाते हैं,

'शाम कहा तो शाम है, राम कहा तो राम'

यानि सब नाम उसी के हैं लेकिन प्रेम और सच्चाई

के लिए कुछ सन्देह है। यह भगवान का रूप कैसे हैं ? प्रेम के लिए श्री बीर फरमाते हैं,

प्रथम ओ३म् आनन्द अकेला प्रेम होए फिर सब में खेला।
प्रीतम बन के प्रेम कमाया मानुष को प्रेमी उपजाया।

भगवत सन्देश में आपका वचन है,

प्रेम प्रभु का जोड़ है प्रेम प्रभु का सार।
खेल रही है प्रेम से सब दुनियां की कार।
श्री सच्चिदानन्द भी ज़ेर प्रेम के जान।
जिस हृदय में प्रेम है तिसका है भगवान।

सत् के लिए उपनिषद में लिखा है,
सत्यम् ब्रह्म यानि सत्य ही ब्रह्म है।
महाभारत आदि में लिखा है,
राजन सत्य ही परम ब्रह्म है।
बालमीकी रामायण में लिखा है,
जगत में सत्य ही ईश्वर है।

श्री महाराज बीर ने इस सत्य में नाना प्रकार के भेदों की गुत्थी को सुलझा दिया है कि रब्ब, नाम, प्रेम और सच्चाई, यह सब एक ही चीज़ हैं। इनके लिए फिरके बनाने, वाद-विवाद करने और आपस में झगड़े

की जरूरत नहीं है। प्रभु आश्रित होना, नाम सिमरन करना और सच्चाई पर कायम रहना प्रभु प्राप्ति के साधन हैं। जिस साधन पर भी चित लगाओ उसी से बेड़ा पार है।

जिसने साच दिल में धारा,
तिसने पाया मोक्ष द्वारा।

अनुवाद : जिसने सत्य को दिल में बसाया, उसी ने मुक्ति पाई।

व्याख्या : यहां साच के दोनों अर्थ हो सकते हैं और भविष्य में चार शब्दों के यही दोनों अर्थ लिए जावें तो कोई हर्ज नहीं। प्रथम यह कि सत् रूप भगवान को जिसने हृदय में बसा लिया वही मुक्ति का अधिकारी ठहरा क्योंकि जब तक भगवान का नाम सिर्फ वाणी तक ही सीमित है तब तक पूर्ण विश्वास या पूर्ण प्रेम नहीं कहा जा सकता। पूर्ण विश्वास या पूर्ण प्रेम तभी कहा जा सकता है जब कि उसका रूप हृदय पर अंकित हो जावे क्योंकि हृदय सारे शरीर की राजधानी है। जो आत्मा की इस राजधानी पर नहीं पहुंचा वह बाहर जंगलों में ही भटका। जब भगवान हृदय में बस गए तो सारा शरीर और उसके कार्य भगवान के लिए ही हो गए क्योंकि

शरीर के संचालन की सारी गति हृदय से ही होती है। जब इस प्रकार भगवान का चिंतन हुआ तो मुक्ति में क्या शक रहा।

दूसरा अर्थ व्यवहार का सत् होना है। जब मन में यह बात जम गई कि सत् की जीत होती है न कि झूठ की, फिर सब कार्यों में पवित्रता आ गई। जीवन यज्ञमय बन गया अब इससे मुक्ति अवश्य मिलेगी। पहला अर्थ भक्तिवाद का और दूसरा अर्थ कर्मबाद का है। मुक्ति की प्राप्ति दोनों से ही होती है, इसमें सन्देह नहीं।

जिसने साच बसाया चीत,
तिसने नाम पाया है मीत।

अनुवाद : जिसने हृदय में नाम धारण किया, प्यारे उसी ने भगवान पाया।

व्याख्या : इस शब्द में सत् की महिमा का वर्णन है यानि जिसने सत्य को जीवन में धारा और मन वाणी कर्म से असत् को छोड़ दिया, वह शुद्ध संकल्प मनुष्य भगवान को पाने का अधिकारी हुआ या उसे ही भगवत प्रीति का सत्य का मार्ग मिला। उपनिष्द में भी भगवान से यही प्रार्थना की गई है कि भगवान हमें असत्य से

सत्य की तरफ ले जाओ क्योंकि यही मुक्ति का मार्ग है। शेख सादी फरमाते हैं,

रासती मूजब रज़ाए खुदास्त
कस न दीदम गुम शुद अज़राहे रास्त।

मतलब सच्चाई ही ईश्वर को पसन्द है। मैंने सच्चे रास्ते जाते हुए किसी को गुम होते हुए नहीं देखा।

साच बिना कोई सुच्चा नांहि,
साच बिना कुछ ऊंचा नांहि।

अनुवाद : सच्च के बिना कोई भी पवित्र नहीं और सच्च के बिना कोई भी बड़ा नहीं।

व्याख्या : यहां भी सच्च की महिमा है। संसार में जो कोई भी कार व्यवहार है अगर उसमें सच्च का रूप नहीं तो वह कार्य अपवित्र है, फजूल है। इसका परिणाम कुछ अच्छा नहीं होगा। उस कार्य का पालन करना ऐसा ही है जैसा कि रेत से महल तैयार करना या बिना नींव के मकान तैयार करना। अपवित्र वस्तु का संसार में टिकाओ नहीं होता और न अपवित्र कार्य का परिणाम अच्छा निकलता है। जो काम सच्चाई को समाने रख

कर किया जाता है उस से आला परिणाम पैदा होते हैं। इसके आलावा दुनियां में जो बढ़ाई या इज्जत है वह भी सच्चाई की बदौलत है यानि जहां सच्चाई नहीं, वहां बढ़ाई और इज्जत भी नहीं। यह हो सकता है कि कुछ समय के लिए झूठा आदमी अपने फरेब और झूठ के कारण लोगों पर अपना रोहब जमा ले और हकूमत कायम कर ले लेकिन आखिर में हानि और ख्वारी होती है और सच्ची इज्जत और महानता सत्य पुरुष को ही मिलती है। पदम पुराण में लिखा है कि—

'सत्य पर ही संसार का टिकाओ है।' धर्म की स्थिति भी सत्य में ही है। सत्य के कारण ही समुन्द्र अपनी मर्यादा का उलंघन नहीं करता। राजा बली भगवान विष्णु को पृथ्वी देकर खुद पाताल में चले गए और छल से बांधे जाने पर भी सत्य पर ही डटे रहे। सत्य ही आला ज्ञान है। सत्य भाषण में किसी प्रकार कलेश नहीं। सत्य ही साधु पुरुषों की कसौटी है सब सहारों में सत्य का सहारा ही श्रेष्ठ माना गया है। सत्य पूर्ण जगत का आभूषण है। इसके आश्रय से मलेच्छ भी स्वर्ग में पहुंच जाता है।

जिसने मन में साच बसाया,
उसने समझो सब कुछ पाया ।

अनुवाद : जो सत्य पर जम गया उसे सब कुछ प्राप्त हो गया ।

व्याख्या : शास्त्रों में लिखा है कि मनुष्य का जीवन लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति है। यहां "सब कुछ" से मुराद धर्म, अर्थ, काम मोक्ष है। महाराज बीर फरमाते हैं कि जिसके हृदय में सत्य बस गया, भगवान पर अटल विश्वास हो गया, उनके चरणों में पूर्ण श्रद्धा हो गई, उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हो गई । महाराज बीर फरमाते हैं,

मन में सच्च बसाए के, वीरा झूठ त्याग ।
सोते सोते मर मिटा, अब तो भाई जाग ।
जहां साच तहां प्रभु है देखा है अजमाए ।
साच बिना संसार में खुशी हाथ न आए ।
जेकर होती शांति धनवानों के पास ।
बीरा होते जगत में धनी न मूल उदास ।
लेकिन बीरा शांति साच बिना नहीं होए ।
जो हृदय में धार ले उसे प्राप्त होए ।

मतलब कि जहां सच्च है वहीं भगवान हैं वहीं परम शांति है, वहीं सुख और चैन है, आनन्द और राहत है। इस लिए सत्य को धारना चाहिए क्योंकि इसके बिना सब वृथा है।

साच कमाओ सारे चीत,
सब में प्रेम बढ़े फिर मीत।

अनुवाद : ऐ दुनियां के लोगो ! सत्य पर अमल करो फिर सब में प्रेम बढ़ेगा।

व्याख्या : सच्चे आनन्द का सही मार्ग बताकर दयालु महात्मा की आखिर में प्रेम भरी अपील है कि दुनियां के लोगो ! सच्च पर जम जाओ। अपने कार्य व्यवहार में सत्य पर आचरण करो। जब सत्य का राज होगा तभी संसार में प्रीति प्यार बढ़ेगा क्योंकि सत्य होने पर ही यह सत्य ज्ञान प्रकट होता है कि यह सब एक ही रूप है। द्वैत, गैरियत, असत्य के कारण ही झगड़े फसाद और दंगे होते हैं। अगर दोनों धड़ों के बीच असत्य न हो तो कभी झगड़ा नहीं हो सकता। प्रेम तो आनन्द रूप है। इसमें गैरियत और द्वैत का काम ही नहीं। आज लोग झूठ की बुनियादों पर मुहब्बत, प्रेम, आल-

मगीर बिरादरी का महल तैयार करना चाहते हैं लेकिन हज़ारों ही पुस्तकें, पम्फलेट छपवाने पर, हज़ारों जलसे-जलूस करने पर भो लोगों के दिलों की मैल नहीं कटती। ज़रा सा शोर होने पर आपस में हैवानों की तरह लड़ कर मर जाते हैं। यही कार्य अगर सत्य की नींव पर किया जाए तो फिर झगड़े तो क्या, इनके होने का भी भय न रहे क्योंकि पहली हालत में यह बात दिल में नहीं जमी कि सत्य का प्रकाश नहीं हुआ।

यह सब एक रूप हैं। दूसरी सूरत में हृदय में यह बात घर कर गई कि सब एक ही रूप हैं। अब यह प्रेम स्थिर होगा, आरज़ो नहीं होगा। महात्माओं में यह विशेषता होती है कि वह बनावटी प्रापोगन्डा को नज़र अन्दाज़ करके बुनियादी कामों पर ध्यान देते हैं। बीर फरमाते हैं,

जो हो बात सच्ची वो कर साफ साफ,
हकीकत का होगा तभी इन्कशाफ

यानि हकीकत का इन्कशाफ या सत्य ज्ञान का प्रकाश सच्चाई पर अभ्यास करने से होगा।

**प्रेम करो तो सब कुछ पाओ,
बीरा साचा प्रेम कमाओ।**

अनुवाद : प्रेम करोगे तो सब कुछ मिलेगा, इस लिए सच्चा प्रेम कमाओ।

व्याख्या : पिछले शब्द में कह चुके हैं कि रब्ब, नाम, प्रेम, सच्चाई चारों एक ही चीज़ हैं। अपनी रुचि अनुसार जिधर मन लगे, वही साधना करनी चाहिए। जिस तरह सच्चाई से चारों पदार्थ मिलते हैं इसी तरह प्रेम से भी उनकी प्राप्ति होती है। क्योंकि श्री महाराज वीर खुद प्रेम के अवतार हैं, इस लिए प्रेम की पूर्णता पर ही आपने 'पिया दर्शन' की समाप्ति की है और प्रेम को ही जीवन में धारण करने का उपदेश किया है : 'प्रेम की महिमा' में उनका वचन है,

चार वेद छः शास्त्र भिन्न भिन्न ज्ञान भंडार
बीरा देखे खोज के प्रेम है सबका सार
प्रेम बिना संसार में कोई न मकसद पाए
बेशक दुनियां त्याग के बीरा जोर लगाए
जिनके हृदय प्रेम है तिनके वस में राम
यारी रखनी राम से बीर प्रीत बिन खाम
प्रेम बड़ा अनमोल है बूढ़ा बालक जोए
प्रेम कमा के देख ले प्रभ को पावे सोए
योग विराग प्रेम से बिलकुल नीके जान
जहां प्रेमी पहुंचते रहती अकल हैरान।

शिष्य के इस वचन कि "किस विध परम द्वारा पाऊं" से पुस्तक का आरम्भ हो कर "प्रेम करो तो सब कुछ पाओ" पर समाप्ति हुई। कितना आला ढंग है। पुस्तक के पहले पद्य और आखिरी पद्य की कैसी संगति है। पाठकजन खुद विचार करें और इसको जीवन में लाकर पिया दर्शन से निहाल होंवें।

—०—
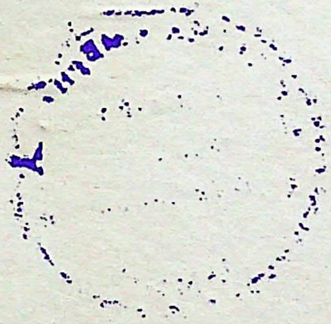
K. P. SABHA AMBPHALLA
LIBRARY
No ....
Date............
JAMMU